आज़ादी का अमृत महोत्सव

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

UNESCO

United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization

क्षेत्रीय जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र
Regional Centre for Biotechnology

जैव दर्पण

चतुर्थ अंक

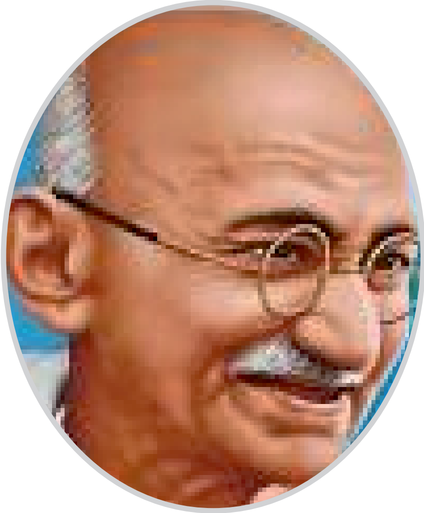

'युवक और युवतियाँ अंग्रेजी और दुनिया की दूसरी भाषाएँ खूब पढ़ें और जरूर पढ़ें। लेकिन उनसे मैं आशा करूँगा कि वे अपने ज्ञान का प्रसाद भारत को और संसार को उसी तरह प्रदान करेंगे, जैसे बोस, राय और स्वयं कवि रवीन्द्रनाथ ने प्रदान किया है। मगर मैं हरगिज़ यह नहीं चाहूँगा कि कोई भी हिन्दुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊँचे से ऊँचा चिन्तन नहीं कर सकता है।'

–महात्मा गाँधी

हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।

– माखनलाल चतुर्वेदी

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।

–मैथिलीशरण गुप्त

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गर्व का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता है।

–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

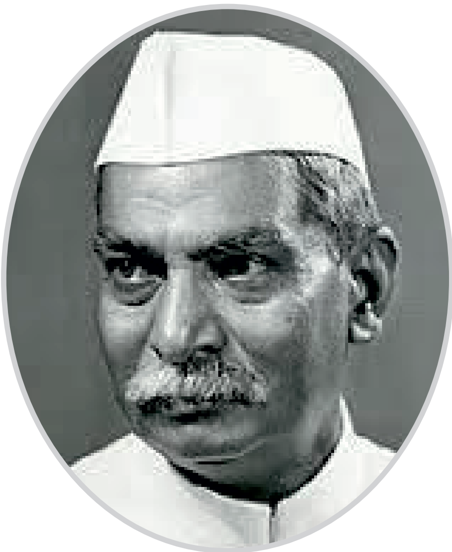

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
संदेश	1
शैक्षणिक कार्यक्रमों का अवलोकन	7
लेख	
भारतीय संस्कृति और परंपरा	11
भुला दी गई प्रथाएँ	15
मस्तिष्क की संरचना व कार्य प्रणाली	17
विलुप्त संस्कृति	19
कुंभ मेला	22
प्राकृतिक घड़ी और शरीर का संबंध	24
दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र नगरपालिका ठोस अपशिष्ट : पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव	27
मंथन	28
दोस्ती का महत्व	29
हिंदी के प्रचार-प्रसार में सिनेमा का महत्व	31
कविताएं	
स्वाभिमान	34
कुदरत	34
पिता का प्यार	35
उलझे-उलझे पल	36
पर्यावरण	37
संस्थागत गतिविधियां	38
महत्वपूर्ण प्रशासनिक शब्द, अर्थ और वाक्य प्रयोग	42

संदेश

राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार एवं संवर्धन करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। भाषा के प्रचार–प्रसार में पत्र–पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पत्रिकाएं जहां एक ओर विचारों को जनमानस तक पहुंचाने का कार्य करती हैं, वहीं दूसरी ओर यह लोगों के रचनात्मक एवं सृजनात्मक लेखन को भी प्रोत्साहित करती हैं। आज हिंदी देश में सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। वर्तमान में कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग में वृद्धि के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी हिंदी का प्रभुत्व बढ़ा है। राजभाषा के विकास में हिंदी का भी महत्वपूर्ण योगदान है। हमारा देश विविधता में एकता का देश कहलाता है। संस्थान में देश के विभिन्न प्रदेशों से आए कार्मिक अपनी विविध संस्कृतियों को साझा करते हैं, जहां उनसे संवाद स्थापित करने में हिंदी की अहम भूमिका है।

सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को सरल और सुगम बनाने हेतु पत्रिका के इस अंक में रोजमर्रा में प्रयुक्त होने वाले कुछ सामान्य अंग्रेजी/हिंदी वाक्यांश को शामिल करने के अतिरिक्त हमारे देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं तथा सभ्यता पर प्रकाश डालने और संस्थान के महत्वपूर्ण शैक्षिक कार्यक्रमों की उपयोगी जानकारी प्रदान कर नवोदित रचनाकारों को एक मंच प्रदान करने का प्रयास किया गया है। मेरा मानना है कि हिंदी में 'वसुधैव कुटुम्बकम' के विचार के कारण अंतर्राष्ट्रीय जगत के दर्शन समाहित हैं। इस भाषा में इतनी भाक्ति और सामर्थ्य है कि यह प्रगति के पथ पर अग्रसर होती जा रही है।

राजभाषा के बारे में मेरा विचार है कि हिंदी के जटिल हिंदी शब्दों के स्थान पर सरल शब्दों का उपयोग करें तथा हमें अपने सभी कार्य हिंदी में करने को प्राथमिकता देनी चाहिए जिससे राजभाषा कार्यान्वयन में गुणात्मक प्रगति होगी।

इस दिशा में संस्थान की हिंदी पत्रिका 'जैव दर्पण' के चतुर्थ अंक को आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका के रचनाकारों और पाठकों को मेरी शुभकामनाएं।

–डॉ. अरविंद के. साहू
कार्यपालक निदेशक

संदेश

संस्थान की हिंदी पत्रिका 'जैव दर्पण' के चतुर्थ अंक से जुड़ना मेरी लिए अत्यंत सुखद अनुभूति है। केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/संस्थानों/कार्यालयों में विभिन्न प्रांतों के अधिकारीगण कार्य करते हैं। उनकी अलग–अलग संस्कृतियों और अन्य विविधताओं के आदान–प्रदान के लिए एक सामान्य सूत्र भाषा की आवश्यकता होती है। मेरे विचार में सहज और सरल शैली के कारण हिंदी सूत्र भाषा का बखूबी निर्वहन कर रही है और यही कारण है कि यह हमारी अभिव्यक्ति सम्प्रेषण का भी महत्वपूर्ण स्रोत है। यह पत्रिका संस्थान में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यगणों को साहित्यिक अभिरुचि को साकार करने के लिए एक मंत्र भी प्रदान करती है।

पत्रिका के नियमित रूप से प्रकाशित किए जाने में रचनाकारों का बहुमूल्य योगदान होता है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में अनेक छात्र और कर्मी पत्रिका के लिए अपनी रचनाएं भेजकर लेखन प्रतिभा को प्रतिबिंबित करते रहेंगे जिससे संस्थान में साहित्य के प्रति रुचि बढ़ेगी और हिंदी के प्रचार–प्रसार में वृद्धि होगी।

मैं 'जैव दर्पण' के प्रकाशन की सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

–प्रो. राजेन्द्र प्रसाद रॉय,
अधिष्ठाता

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि संस्थान की हिंदी पत्रिका 'जैव दर्पण' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। भावों की अभिव्यक्ति के इस माध्यम को निरंतरता प्रदान करना एक सराहनीय प्रयास है। संभवतः हिंदी को राजभाषा इसलिए बनाया गया है क्योंकि हिंदी में कार्य करना सहज और सरल है तथा हिंदी भाषा को जानने, समझने और बोलने वाले देश के कोने–कोने में विद्यमान हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि पत्रिका के प्रकाशन से संस्थान में राजभाषा के प्रचार–प्रसार को निश्चित रूप से नए आयाम मिलेंगे तथा राजभाग विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम के अनुसरण में सरकारी निर्देशों का अनुपालनन भी सुनिश्चित किया जा सकेगा।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संस्थान के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, रचनाकारों से प्राप्त सहयोग और प्रेरणा तथा पत्रिका के संपादक मंडल को आभार प्रकट करता हूं और 'जैव दर्पण' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूं।

–डॉ. सुदीप भार
प्रशासन नियंत्रक

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि क्षेत्रीय जैवप्रौद्योगिकी केन्द्र 'जैव दर्पण' पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। देश की एकता तथा अखंडता को बनाए रखने मे हिंदी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसलिए इस भाषा का सम्मान करना हम सबका दायित्व है। हम अपनी शोध गतिविधियों को आगे बढ़ाते हुए सरकार की राजभाषा नीति एवं नियमों के अनुपालन में सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। इक्कीसवीं सदी तकनीक के विस्तार की सदी है। इसी सदी में हिंदी ने तकनीक से प्रगाढ़ दोस्ती कायम की है। हिंदी जब से तकनीक से जुड़ी है, उसकी उपयोगिता और महत्ता पहले से ज्यादा बढ़ गई है। 1980 के दशक में हिंदुस्तान में कंप्यूटर के अनुप्रयोग से भाषाई स्तर पर अवसर के नए द्वार खुले। हिंदी भी कंप्यूटर से जुड़ी। यह गौर करने की बात है कि भारत में 1990 के दशक में शुरू हुई भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने संचार की प्रक्रिया को गति प्रदान की है। हिंदी अनेकरूपा हुई। शुरुआती दौर में हिंदी ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए रोमन लिपि का सहारा लिया जो आज भी प्रचलन में है, किंतु तकनीक में हो रहे नए आविष्कारों ने देवनागरी में अनेक सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराए हैं। आज यूनिकोड फॉन्ट के प्रयोग से तकनीक की दुनिया में हिंदी का मानक रूप काफी कुछ स्थिर हुआ है।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका की पठन सामग्री पाठकों के लिए रोचक व प्रेरणादायक सिद्ध होगी। आशा करता हूं कि राजभाषा के प्रचार–प्रसार के दायित्वों का निर्वाह करते हुए पत्रिका के संपादक मंडल के अथक प्रयासों तथा रचनाकारों के बहुमूल्य सहयोग की सराहना करता हूं और उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

–प्रो. प्रसनजीत गुच्छाइत,
कुलसचिव

संपादक

क्षेत्रीय जैवप्रौद्योगिकी केन्द्र का राजभाषा अनुभाग हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए अपने प्रयासों के प्रति कृत संकल्प तथा पूर्णतया प्रतिबद्ध है। हिंदी पत्रिका 'जैव दर्पण' के संपादन के दायित्व को पूरा करने का प्रयास हमारा सौभाग्य है। स्मरण कराना चाहूंगी कि आज़ादी के बाद 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया था। इसीलिए भारत में 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। तब से आज तक केंद्र सरकार द्वारा राजभाषा से संबंधित कई अधिनियम, नियम, संकल्प, उपबंध आदि जारी किए गए हैं। भारतेन्दु हरीशचंद्र के ये शब्द किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए सटीक सिद्ध होते हैं:–

'निज भाषा उन्नत अहे, सब उन्नति को मूल'

उपरोक्त कथन को, माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा विदेशी दौरों के दौरान भी हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग, सत्य सिद्ध करता है। यह समस्त भारतीयों के लिए गर्व की बात है क्योंकि यह हमें विश्वास दिलाता है कि यह एक ऐसे राजनेता हैं जो हमें वैश्विक स्तर पर न केवल राजनैतिक, आर्थिक एवं तकनीकी क्षेत्र में आगे ले जा रहे हैं, बल्कि अपनी संस्कृति का जश्न मनाने और संपूर्ण विश्व में निज भाषा में अपने संबोधन देकर प्रत्येक भारतवासी को गौरवान्वित महसूस करा रहे हैं।

निःसंदेह, इस केन्द्र में हिंदी में कार्य एवं हिंदी संबंधित गतिविधियों में निरंतर बढ़ोतरी हो रही है। राजभाषा अनुभाग एवं आई.टी. अनुभाग के महत्वपूर्ण योगदान से नई तकनीकों द्वारा विभिन्न कार्यशालाओं आदि का आयोजन किया जा रहा है जिसका परिणाम स्पष्ट है क्योंकि अधिकांश अधिकारिक काम हिंदी में शुरु हो गया है। यह देखकर अति प्रसन्नता होती है जब हमारी संस्था के वरिष्ठ अधिकारीगण, अहिंदी हिंदी भाषी राज्यों के हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी आगे आते हैं और हिंदी में सीखने और काम करने की कोशिश करते हैं तथा राजभाषा हिंदी में कार्य करते हुए गौरवान्वित महसूस करते हैं।

'जैव दर्पण' पत्रिका के प्रकाशन में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से प्राप्त सहयोग तथा प्रेरणा के लिए मैं आभार प्रकट करती हूं। पत्रिका में रचनाकारों की सृजनशीलता, विभिन्न लेखों, कहानियों, कविताओं, संस्मरणों तथा विभागीय गतिविधियों को छायाचित्रों से सुसज्जित करने का हमारा यह प्रयास आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

–डॉ. निधि शर्मा
कार्मिक अधिकारी एवं
हिंदी नोडल अधिकारी

सह–संपादक

सम्मानित पाठकगण,

यह अत्यधिक प्रसन्नता का विषय है कि आरसीबी की गृह पत्रिका 'जैव दर्पण' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका का यह अंक भारतीय संस्कृति, पंरपरा और विरासत पर आधारित है। इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु कार्मिकों ने अपनी रचनाएं भेजकर महत्वपूर्ण योगदान दिया है जो राजभाषा के प्रति अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रेम को प्रतिबिंबित करता है। हिंदी के प्रचार–प्रसार में पत्रिकाओं का प्रकाशन एक रचनात्मक एवं प्रेरणादायक प्रयास है। संपर्क भाषा के रूप में राजभाषा हिंदी देश का गौरव है। गृह पत्रिका संस्थान से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी एवं क्रियाकलापों के संकलन का एक उपयोगी दस्तावेज होने के साथ–साथ संस्थान के उद्देश्यों, लक्ष्यों, एवं उपलब्धियों को साझा करने का एक सशक्त माध्यम है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए ठोस प्रयास किए जाएं। यह तभी संभव है जब हमें अपने भाषा के प्रति अपने दायित्वों का स्पष्ट ज्ञान हो, लक्ष्य प्राप्ति की सार्थक योजनाएं बनाकर उनका सफल कार्यान्वयन किया जाए। हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए हम सभी को एकजुट होकर प्रयास करने की जरूरत है।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए हमें बड़ी संख्या में लेख एवं रचनाएं प्राप्त हुई है। संस्थान के रचनाकारों ने अपनी लेखनी एवं रचनाओं से गृह पत्रिका के इस अंक को और अधिक समृद्ध एवं उपयोगी बनाने में बहुमूल्य सहयोग दिया है। पत्रिका का यह अंक आपको कैसा लगा? आपके बहुमूल्य सुझावों से पत्रिका को समृद्ध बनाने में अत्यधिक सहायता मिलेगी। पत्रिका का पल्लवित एवं पुष्पित, नवीनतम चतुर्थ अंक आप सभी तक पहुंचाने में अपना श्रम एवं समय देने के लिए सभी रचनाकारों को उनके बहुमूल्य योगदान के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। आशा है कि आप सभी का यह सक्रिय सहयोग निरंतर प्राप्त होता रहेगा

– महाराम तंवर,
सलाहकार (राजभाषा)

शैक्षणिक कार्यक्रमों का अवलोकन

संस्थान का उद्देश्य प्री–डॉक्टरेल, डॉक्टरल तथा पोस्ट–डॉक्टरल स्तर पर बायोटेक विज्ञान में शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने, डॉक्टरल छात्रों के लिए कार्य क्षेत्र–विशिष्ट अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करने के साथ–साथ सक्षम वैज्ञानिकों का एक अत्यधिक विशिष्ट कैडर, संस्थान के बहुविषयक पीएचडी कार्यक्रम, एमएस–पीएचडी कार्यक्रम और स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम द्वारा तैयार करना है। संस्थान में प्रवेश प्रक्रिया का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार हैः–

पीएचडी प्रोग्राम के लिए प्रवेश प्रक्रिया वर्ष में दो बार (मानसून सत्र जुलाई में और शरद सत्र जनवरी में) आरंभ की जाती है। **एमएस–पीएचडी प्रोग्राम** के लिए प्रवेश प्रक्रिया वर्ष में एक बार की जाती है जिसका सेमेस्टर जुलाई में आरंभ किया जाता है।

जैवप्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, जैवसांख्यिकी और जैवविज्ञान में पीएचडी कार्यक्रम : बहुविषयक पीएचडी कार्यक्रमों का लक्ष्य अत्यधिक कुशल और वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी मानव संसाधनों के उत्पादन के पैमाने का विस्तार करना है।

जैवप्रौद्योगिकी में एमएस–पीएचडी कार्यक्रम : यह कार्यक्रम विज्ञान, इंजीनियरिंग अथवा चिकित्सा की किसी भी शाखा में स्नातक डिग्रीधारकों के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह कार्यक्रम अनुसंधान आधारित शिक्षा पर बल देता है जो जीवन विज्ञान और जैवप्रौद्योगिकी में व्यापक प्रशिक्षण प्रदान करता है। इस पाठ्यक्रम का सामान्य उद्देश्य छात्रों को बुनियादी प्रयोगशाला कौशल से परिचित कराना और विशेष क्षेत्रों में अनुसंधान करने के लिए जैवप्रौद्योगिकी का व्यापक ज्ञान प्रदान करना है। कार्यक्रम की अवधि न्यूनतम पांच वर्ष और अधिकतम सात वर्ष है।

पात्रता मानदंड – प्रवेश प्रक्रिया एमएसपीजीडी के लिए

औद्योगिक जैवप्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम : यह एक वर्षीय कार्यक्रम उद्योग–केंद्रित है जो उद्योग की जरूरतों को पूरा करने के लिए सैद्धांतिक समझ और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान कर शिक्षापद्धति तथा व्यवसाय के बीच ज्ञान के अंतर को दूर करता है।

विनियमन, उत्पाद विकास, स्केल–अप, विनिर्माण विज्ञान और जैवउद्यमिता आरसीबी में विकसित विशेषज्ञता के प्रमुख क्षेत्र हैं। संस्थान उच्च प्रशिक्षित वैज्ञानिकों के लिए कैरियर विकास तथा कैरियर उन्नति के लिए आवश्यक विशिष्ट क्षेत्रों में उनके कौशल को बढ़ाने के अवसर प्रदान करता है।

भारतीय छात्र : विज्ञान, इंजीनियरिंग अथवा चिकित्सा की किसी भी शाखा में स्नातक की डिग्री में न्यूनतम 60 प्रतिशत अंक। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग (नॉन–क्रीमी लेयर) और दिव्यांगजन श्रेणियों के लिए 5 प्रतिशत छूट प्रदान की जाती है। अंतिम वर्ष के छात्र भी आवेदन करने के पात्र हैं, बशर्ते वे प्रवेश के समय आवश्यक अंकों का प्रमाण प्रस्तुत कर सकें।

विदेशी छात्र : विज्ञान, इंजीनियरिंग अथवा चिकित्सा की किसी भी शाखा में स्नातक की डिग्री में न्यूनतम 60 प्रतिशत अंक। अंतिम वर्ष के छात्र भी आवेदन करने के पात्र हैं, बशर्ते वे प्रवेश के समय आवश्यक अंकों का प्रमाण प्रस्तुत कर सकें। प्रवेश भारत सरकार से छात्र वीज़ा और वैध चिकित्सा बीमा प्राप्त करने के अधीन है।

बायोसाइंस में i3c- ब्रिक आरसीबी पीएचडी कार्यक्रम : बायोसाइंस में i3c ब्रिक–आरसीबी पीएचडी कार्यक्रम सहयोगात्मक पहल है जिसे बायोसाइंस के क्षेत्र में अत्यधिक कुशल और वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी कार्यबल विकसित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह अंतःविषय कार्यक्रम क्षेत्रीय जैवप्रौद्योगिकी

केन्द्र (आरसीबी), जैवप्रौद्योगिकी अनुसंधान नवाचार और क्षमता निर्माण कार्यक्रम (ब्रिक) तथा इंटरनेशनल सेंटर फॉर जेनेटिक इंजीनियरिंग एंड बायोटेक्नोलॉजी (आईसीजीईबी) का एक संयुक्त प्रयास है। कार्यक्रम का उद्देश्य उन्नत तकनीकी प्लेटफार्मों के साथ कक्षा निर्देश, ऑनलाइन अधिगम, कार्यशालाओं और व्यावहारिक प्रशिक्षण के संयोजन के माध्यम से जीवन विज्ञान तथा जैवप्रौद्योगिकी में व्यापक शिक्षा प्रदान करना है। प्रतिभागी संस्थानों में अधिक शैक्षणिक और अनुसंधान चर्चाओं को बढ़ावा देकर यह कार्यक्रम पीएचडी विद्वानों के लिए व्यावसायिक नेटवर्किंग के अवसरों को बढ़ाने का प्रयास करता है।

विशेषताएँ

क) इमर्शन कार्यक्रम : इस पीएचडी कार्यक्रम की विशेषता तीन महीने का इमर्शन पहलू है जो छात्रों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए डिज़ाइन किए गए पर्याप्त अनुदान द्वारा समर्थित है। इस पहल का उद्देश्य उभरते वैज्ञानिकों में नवाचार, सहयोग और उद्यमिता की संस्कृति का सृजन करना है। इमर्शन कार्यक्रम की लागत को पूरा करने के लिए कार्यक्रम को प्रति व्यक्ति 1.50 लाख रुपये की राशि का सहयोग दिया जाता है।

ख) विविध अनुसंधान अवसर : प्रारंभिक पाठ्यक्रम और इमर्शन अनुभव के बाद, विद्वान अपने विशिष्ट अनुसंधान हितों के आधार पर ब्रिक नेटवर्क, आरसीबी अथवा आईसीजीईबी के अंतर्गत विभिन्न संस्थानों में अनुसंधान पर्यवेक्षकों के साथ संरेखित होते हैं।

प्रतिभागी संस्थान : कार्यक्रम में निम्नलिखित संस्थानों का संघ शामिल है :–

राष्ट्रीय बायोमेडिकल जीनोमिक्स संस्थान	राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र
मूल कोशिका विज्ञान एवं पुनर्योजी औषधि संस्थान	राष्ट्रीय कोशिका विज्ञान केंद्र
राष्ट्रीय कृषिखाद्य जैवप्रौद्योगिकी संस्थान	राष्ट्रीय पशु जैवप्रौद्योगिकी संस्थान
नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्लांट जीनोम रिसर्च	जीवन विज्ञान संस्थान
राजीव गांधी जैवप्रौद्योगिकी केंद्र	राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान
जैव संसाधन और सतत विकास संस्थान	डीएनए फिंगरप्रिंटिंग और डायग्नोस्टिक्स केंद्र
ट्रांसलेशनल स्वास्थ्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान	आरसीबी और आईसीजीईबी

इन सहयोग का उद्देश्य संपूर्ण भारत में जैवप्रौद्योगिकी अनुसंधान और शिक्षा में उत्कृष्टता को बढ़ावा देना है। कोर्सवर्क सहित कार्यक्रम की न्यूनतम अवधि तीन वर्ष और अधिकतम छह वर्ष है। यह कोर्स सुनिश्चित करता है कि i3c ब्रिक आरसीबी पीएचडी कार्यक्रम के स्नातक बायोसांइस में सफल करियर के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और अनुभव से परिपूर्ण हैं।

पात्रता मानदंड : यह कार्यक्रम जैवप्रौद्योगिकी, चिकित्सा और इंजीनियरिंग सहित व्यापक क्षेत्रों की पृष्ठभूमि के प्रतिभाशाली उम्मीदवारों की पहचान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। कार्यक्रम में प्रवेश के दो ट्रैक हैं।

ट्रैक I : जीवन विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी, एमफार्मा, एमवीएससी, एमबीबीएस में एमएससी/एमटेक

डिग्री धारक भारतीय छात्र या पूर्ववर्ती योग्यता डिग्री परीक्षा में कुल 55 प्रतिशत अथवा समकक्ष ग्रेड की डिग्री आवश्यक है। उपरोक्त सभी विषयों से चार साल के स्नातक भी यूजीसी के दिशानिर्देशों के अनुसार पात्र हैं। सभी आवेदकों के पास पांच साल की वैध राष्ट्रीय स्तर की फैलोशिप होनी चाहिए जैसे डीबीटी–जेआरएफ, सीएसआईआर–जेआरएफ, यूजीसी–जेआरएफ, आईसीएमआर.–जेआरएफ अथवा समकक्ष।

ट्रैक II : पूर्ववर्ती अर्हक डिग्री परीक्षा में 55 प्रतिशत कुल अंकों सहित नॉन–बायोलॉजिकल साइंस (बीटेक / बीई) अथवा चिकित्सा (एमबीबीएस) से इंजीनियरिंग की किसी भी शाखा में स्नातक। आयु सीमा : आवेदन के समय 30 वर्ष।

प्रवेश प्रक्रिया : इच्छुक उम्मीदवारों को प्रवेश चक्र के दौरान आरसीबी की आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन जमा करना होगा।

चयन : उनकी शैक्षणिक अंक और फैलोशिप योग्यता के आधार पर शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवारों को अनुसंधान के लिए योग्यता और तैयारी का आकलन करने हेतु साक्षात्कार के लिए आमंत्रित किया जाता है।

औद्योगिक जैवप्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा : क्षेत्रीय जैवप्रौद्योगिकी केन्द्र (आरसीबी) औद्योगिक जैवप्रौद्योगिकी (पीजीडीआईबी) में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रदान करता है जिसे छात्रों को व्यावहारिक कौशल और जैवप्रौद्योगिकी क्षेत्र से संबंधित ज्ञान प्रदान कर शिक्षाविदों और उद्योग के बीच विद्यमान अंतर दूर करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

विशेषताएँ

क) यह कार्यक्रम अनुसंधान और विकास, उत्पादन, परीक्षण, लाइसेंसिंग, पैकेजिंग और बायोटेक तथा बायोफार्मास्युटिकल उत्पाद जारी करने सहित सहित जैवप्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित है।

ख) पाठ्यक्रम उद्योग विशेषज्ञों और आरसीबी संकाय द्वारा संचालित किए जाते हैं जो सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक अंतर्दृष्टि का मिश्रण सुनिश्चित करते हैं।

ग) संबंधित छात्रों को उन्नत प्रौद्योगिकियों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

घ) इस कार्यक्रम में बायोटेक उद्योगों के साथ 3–4 महीने की इंटर्नशिप शामिल है जो वास्तविक दुनिया का अनुभव प्रदान करती है और उद्योग कनेक्शन को बढ़ावा देती है।

ड) छात्रों के पास उन्नत प्रौद्योगिकी मंच केंद्र (एटीपीसी) में हाईएंड उपकरण की सुविधा के साथ–साथ भारतीय जैविक डेटा केंद्र (आईबीडीसी) की पहुंच प्रदान की जाती है।

कार्यक्रम की रूपरेखा: यह कार्यक्रम एक शैक्षणिक वर्ष की अवधि का है। पहले छह महीनों में आरसीबी, फरीदाबाद में ऑन–कैंपस पाठ्यक्रम शामिल है जिसमें सैद्धांतिक कक्षाएं और व्यावहारिक सत्र दोनों शामिल हैं। बाद के 3–4 महीने बायोटेक उद्योगों या शैक्षणिक संस्थानों में व्यावहारिक इंटर्नशिप की सुविधा प्रदान करते हैं।

पात्रता मानदंड : आवेदकों के पास न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों सहित विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा या समकक्ष क्षेत्र में स्नातक की डिग्री होनी चाहिए। अतिरिक्त योग्यता और विषय में गहन रुचि वाले उम्मीदवारों को भी आवेदन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

प्रवेश प्रक्रिया : इच्छुक उम्मीदवारों को प्रवेश चक्र के दौरान पीजीडीआईबी की आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन जमा करना होगा।

चयन : शैक्षणिक प्रमाणपत्रों के आधार पर शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवारों को अनुसंधान के लिए उनकी योग्यता और आकलन करने के लिए साक्षात्कार लिया जाता है।

आवेदन प्रक्रिया : पात्र उम्मीदवार 500 रुपये का आवेदन शुल्क देकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, दिव्यांगजन और ईडब्ल्यूएस श्रेणी के उम्मीदवारों को आवेदन शुल्क के भुगतान से छूट दी गई है।

शैक्षणिक तिथियां :

छात्रावास	**प्रस्तावित तिथियां**
आवेदन आरंभ	अक्टूबर
आवेदन बंद	नवंबर
लिखित परीक्षा / साक्षात्कार	दिसंबर
परिणाम की घोषणा	मध्य दिसंबर
पंजीकरण और प्रवेश	जनवरी
अभिविन्यास और कोर्सवर्क की शुरुआत	जनवरी

छह महीने का अनुसंधान प्रशिक्षण कार्यक्रम : यह कार्यक्रम अंतिम वर्ष के स्नातकोत्तर छात्रों और बीटेक / एमटेक उम्मीदवारों के लिए डिज़ाइन किया गया छह महीने का अनुसंधान प्रशिक्षण कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य जैवप्रौद्योगिकी और जीवन विज्ञान के उन्नत क्षेत्रों में व्यावहारिक अनुसंधान अनुभव प्राप्त करना है। जनवरी से जून की अवधि के इस कार्यक्रम में प्रशिक्षु जीवन विज्ञान और जैवप्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विभिन्न विषयों पर अनुसंधान परियोजनाओं में कार्य करते हैं।

पात्रता मानदंड : इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रवेश हेतु अंतिम वर्ष के स्नातकोत्तर छात्र (एमएससी) और मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों, संस्थानों अथवा कॉलेजों के बीटेक / एमटेक छात्र पात्र हैं, जिसके लिए आवेदकों को अपने विभाग के प्रमुख से एक संस्तुति पत्र प्रदान करना अनिवार्य है जिसमें पुष्टि की गई हो कि अनुसंधान प्रशिक्षण उनके वर्तमान डिग्री कार्यक्रम को पूरा करने के लिए एक आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त आवेदक को शैक्षिक योग्यता, शोध अभिरुचि तथा प्रासंगिक अनुभव का उल्लेख करने वाले विस्तृत सीवी के साथ शोध अभिरुचि और उद्देश्यों को प्रकट करने वाला 750 शब्दों तक संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत करना होता है।

आवेदन प्रक्रिया : इच्छुक उम्मीदवार आरसीबी की आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। शैक्षणिक क्रेडेंशियल, अनुसंधान अभिरुचि एवं संस्तुति पत्र के आधार पर आवेदनों की समीक्षा करने के उपरांत चयन किया जाता है।

भारतीय संस्कृति और परंपरा

भारत अपनी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। यहां के विभिन्न धर्म, भाषाएं, परंपराएं और त्यौंहार मिलकर भारत की अद्भुत संस्कृति का निर्माण करते हैं। इस निर्माण के पीछे हमारे देश का सदियों का इतिहास एवं इसकी वैभवशाली विरासत रही है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का इतिहास 5000 साल से भी अधिक पुराना है। दुनियाभर में भारत के रीति–रिवाजों और परंपराओं को अत्यधिक विविध तथा अद्वितीय माना जाता है। हम सभी पूर्वजों की बनाई हुई परंपराओं का पालन भी करते है। किन्तु इस बात पर विचार नहीं करते कि इनके निर्माण का रहस्य क्या है। प्रत्येक रीति–रिवाज़ के पीछे उस समय के लोगों के विचार एवं माहौल भी जुड़े हैं। वे जिस कालखंड में निवास करते थे, उसी के अनुसार उन्होंने अपने रीति–रिवाज़ों को बनाया था। समय के साथ भारतीय परम्परा एवं संस्कृति में बदलाव देखे गए है। लोगों के विश्वास एवं मान्यताओं में परिवर्तन हमारी संस्कृति को विविधता प्रदान करता है। भारतीय परंपरा एवं संस्कृति के निर्माण स्तम्भ के रूप में कुछ बातों का विशेष योगदान है।

रामचरितमानस और भगवदगीता

भारत के पौराणिक ग्रंथ हमें सामाजिक हितों के लिए संघर्ष और सामर्थ्य जैसे संस्कार सिखाते हैं। इन महाकाव्यों ने हमें धर्म, धैर्य, मित्रता तथा कर्तव्यपरायणता का बोध कराया है। रामचरितमानस में सदाचार, शिष्टाचार और नैतिकता का प्राधान्य है तो महाभारत में कार्य योजनाएं चक्रव्यूह, नेतृत्व, निर्माण कला,

दृष्टिकोण, संवाद, शब्द भेद, भाषण, उद्घोषणा आदि प्रबंधकीय तत्वों को देखा जा सकता है। रामायण हमें आदर्श जीवन जीने की कला सिखाती है, तो महाभारत में प्रयुक्त शब्द हमें भाषा का महत्व सिखाते हैं। माते, भ्राता, अनुज, ज्येष्ठ, पिताश्री और सखा जैसे शब्दों से हमें भारतीय होने पर गर्व महसूस होता है। महाभारत हमें मद्यपान और जुए जैसे व्यसनों के दुष्प्रभाव तथा दुष्परिणाम से अवगत कराती है। देखा जाए तो ये दोनों ही महाकाव्य हमें धर्म, दया, त्याग, कर्तव्य, शिष्टाचार, मर्यादा जैसे बहुमूल्य संस्कार सिखाते हैं। विभीषण के शरण में आने पर शंकायमान सुग्रीव के पूछने पर श्रीराम जी कहते हैं –

पापवंत कर सहज सुभाऊ। भजनु मोर तेहि भाव न काऊ।।
जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होई। मोरे सनमुख आव कि सोई।।

अर्थात पापी का यह सहज स्वभाव होता है कि मेरा भजन उसे कभी नहीं सुहाता। यदि रावण का यह भाई निश्चय ही दुष्ट हृदय का होता तो क्या वह मेरे सम्मुख आ सकता था। कदापि नहीं।

मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ। शुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ।।
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा। तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा।।

भावार्थः विभीषण जी कहते हैं कि हे नाथ, मैं अत्यंत नीच स्वभाव का राक्षस हूँ। मैंने कभी शुभ आचरण नहीं किया। जिनका रूप मुनियों के भी ध्यान में नहीं आता, उन प्रभु ने स्वयं हर्षित होकर मुझे हृदय से लगा लिया। रामायण का मूल मंत्र है –

''निर्मल मन जन सो मोहि पावा, मोहे कपट, छल, छिद्र न भावा''
भेद लेन पठवा दससीसा, तबहुं न कछु भय हानि कपीसा'' ।

जो मनुष्य निर्मल मन का होता है, वही मुझे पाता है। मुझे कपट, छल–छिद्र नहीं सुहाते। यदि रावण ने उसे भेद लेने को भेजा है, तब भी हे सुग्रीव, हमें न कोई भय है और न ही हानि।

भगवदगीता भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए उपदेशों का सार है। युद्ध के भयावह परिणाम की कल्पना मात्र से जब अर्जुन विषादग्रस्त हो जाते हैं, तब उन्हें कर्म के लिए प्रेरित करते हुए श्रीकृष्ण उन्हें उपदेश देते हैं। भगवान द्वारा उपदिष्ट होने के कारण इन उपदेशों को मूलतः भगवदगीता कहा गया है। इसमें भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कर्मयोग पर विशेष बल दिया गया है। वे कहते हैं 'कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेशु कदाचन'' अर्थात हे अर्जुन, तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, फल तुम्हारे वश में नहीं है।

गीता उपदेश

रामचरितमानस उपदेश

भारतीय भाषाएँ और नदियां

हमारे देश में बोली जाने वाली 22 भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। भारत के अलग–अलग प्रांतों में रहने वाले लोग विभिन्न भाषाओं में संवाद करते हैं। यहाँ एक प्रसिद्ध कहावत है ''कोस–कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वाणी''। भाषा की यही विविधता भारत की संस्कृति को दूसरी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों से अलग बनाती है। यहाँ के लोग अपने जीवन में अपनी भाषा को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। भारत में आधिकारिक उद्देश्यों में संवाद के लिए हिंदी, उर्दू एवं अंग्रेजी का प्रयोग व्यापक रूप से किया जाता है। यहां भाषा की विविधता हमारी संस्कृति को दूसरों से अलग एवं विस्तार देने का कार्य करती है। किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति वहां की नदियों के किनारे फलीभूत होती है जिस पर नदियां गहरा प्रभाव डालती हैं। सबसे ज्यादा नदियां भारत में बहती हैं। यहां नदियों को देवी कहा जाता है। गंगा, यमुना, सरस्वती, कृष्णा, कावेरी और गोदावरी यहां की कुछ प्रमुख नदियां है। इसके अतिरिक्त सतलुज, ब्यास, रावी, झेलम और चेनाब अन्य पांच मुख्य नदियां है जिनके नाम पर पंजाब (पंच + आब) अर्थात पंजाब का नाम रखा गया है। दुनिया में भारत का प्रयागराज एकमात्र ऐसा स्थान है जहां तीन नदियों का संगम होता है। इसीलिए इसे त्रिवेणी भी कहा जाता है। यही कारण है कि हमारे यहां नदियों के नाम पर लड़कियों के नाम रखना पसंद किया जाता है।

उत्सव एवं समारोह

भारत त्योहारों और मेलों का देश भी कहा जाता है जिसका मुख्य कारण यहाँ के विविध धर्म एवं समूह हैं। जहां मुसलमान ईद मनाते हैं तो वहीं ईसाई क्रिसमस और गुड फ्राइडे मनाते है। सिक्ख समुदाय के लोग बैसाखी, लोहड़ी, गुरु पर्व मनाते हैं। हिंदुओं में दशहरा, दीवाली, दुर्गा पूजा, होली, मकर संक्रांति, रक्षा बंधन, गणेश चतुर्थी, पोंगल, जन्माष्टमी, महावीर जयंती, बुद्ध पूर्णिमा, करवा चौथ जैसे प्रमुख त्यौहार मनाये जाते है। देखा जाए तो हर दिन भारत में एक त्यौहार या उत्सव मनाया जाता है। भारत में उगादी, बीहू गुड़ी

पड़वा, पुथंडु, वैसाखी, पोहेला बोइशाख, वीशु तथा विशुवा संक्रांति भारत के विभिन्न हिस्सों में नए साल के त्योहार के रूप में विक्रम संवत के अनुसार मनाए जाते हैं। क्षेत्रीय एवं सामुदायिक मेले भी भारत में आम त्योहार की तरह मनाये जाते हैं। उदाहरण के लिए, राजस्थान का पुष्कर पशु मेला, हरियाणा का सूरजकुंड हस्तशिल्प मेला तथा इलाहाबाद, प्रयागराज का कुंभ मेला विश्व प्रसिद्ध हैं। ये त्योंहार यहाँ की सांस्कृतिक विरासत को फलीभूत करने में विशेष योगदान देकर इसे और भी समृद्ध बनाते हैं। इन त्यौंहारों और उत्सवों के माध्यम से न केवल धार्मिक आस्था, बल्कि समाज में एकता और भाईचारे की भावना भी प्रबल होती है।

पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्य

भारतीय संस्कृति में पारिवारिक और सामाजिक मूल्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। भारतीय संस्कृति की भव्यता और विकास के पीछे यहाँ की पारिवारिक संरचना का महत्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि यहाँ लोग अपने परिवार को लेकर अत्यंत संवेदनशील होते हैं। पीढ़ियों से भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली की प्रचलित परंपरा रही है। संयुक्त परिवार में सहयोग की भावना फलीभूत होती है। संयुक्त परिवार प्रणाली में परिवार का सबसे बुज़ुर्ग पुरुष सदस्य परिवार का मुखिया होता है। समस्त परिवारी सदस्य उसके आदेशानुसार कार्य करते हैं। समय के साथ अधिकांश मेट्रो शहरों में वर्तमान अर्थव्यवस्था, जीवन शैली और रहने की लागत मंहगी होती जा रही है। आज की शहरी जनसंख्या संयुक्त परिवार मॉडल को पीछे छोड़ रही है और एकल परिवार मॉडल को अपना रही है। पहले संयुक्त परिवार में रहना लोगों में सुरक्षा, सहयोग और सहानुभूति की भावना को बढ़ावा देता था। किन्तु आज के बदलते दौर में आजीविका के लिए लोगों को एकल परिवार में रहना पसंद है। किन्तु आज भी भारत के ग्रामीण परिवार संयुक्त परिवार व्यवस्था में विश्वास करते हैं और अपनी पारंपरिक विरासत को आगे बढ़ाने में सहयोग दे रहे हैं।

अभिवादन या नमस्ते की परंपरा

नमस्ते कहकर सबका अभिवादन करना सबसे लोकप्रिय भारतीय रीति—रिवाजों में से एक है। समय के साथ अब यह केवल भारतीय क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, अपितु जहाँ तक भारतीय धर्म एवं संस्कृति का प्रचार प्रसार हुआ है वहां अभिवादन का यह तरीका देखा जा सकता है। नमस्ते या नमस्कार प्राचीन हिंदू शास्त्रों, वेदों में वर्णित पारंपरिक अभिवादन के पांच रूपों में से एक है। करबद्ध नमस्ते की परंपरा में व्यक्ति यह भाव प्रकट करता है कि वह दिल से आपका स्वागत या अभिवादन करता है। नमः शब्द अहंकार रहित है जिसका प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों में बहुधा किया जाता है। इसका सर्वश्रेष्ठ और ज्वलंत उदाहरण 'सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके, शरण्येत्रयम्बके गौरि नारायणी नमोस्तुते' मंत्र है। इस मंत्र का अर्थ है : हे मां गौरी और भगवान नारायण! आप सभी मंगल कामनाओं को पूरा करने वाली हैं। आप भारण ग्रहण करने योग्य हैं। हम आपको नमस्कार करते हैं।

भारतीय परंपरा के अनुसार प्रतिदिन मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च जाने एवं अपने आराध्य के दर्शन करने से आपको सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होता है जिससे आपके प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है। भारतीय वास्तुकला से संबंधित प्राचीन भारतीय परम्पराओं तथा उनसे जुड़े नियमों की जानकारी अब विकीपीडिया पर भी उपलब्ध है। भारत में 'अतिथि देवो भवः' कहावत भी अभिन्न है। इसका अर्थ है 'अतिथि भगवान के समान है'। यह हिंदू धर्मग्रंथों से लिया गया है। यह एक संस्कृत छंद है जो बाद में 'हिंदू समाज के लिए आचार संहिता' का हिस्सा बन गया क्योंकि अतिथि का भारत की संस्कृति में सदैव सर्वोच्च महत्व रहा है।

भारतीय परिधान

भारतीय परिधान अन्य देशों की तुलना में अपनी संस्कृति एवं परम्पराओं का अहसास दूसरों को कराने में सहजता से कर रहे हैं। भारतीय महिलाओं के परिधानों में साड़ी, लहंगा, चोली घाघरा, सलवार—कमीज का

प्रचलन अधिक है। हमारे देश में महिलाएं अधिकतर साड़ी पहनती हैं। साड़ी एक ही कपड़ा होता है जिसे सिलाई की जरूरत नहीं होती है। यह बनाने में आसान और पहनने में आरामदायक है तथा धार्मिक शिष्टाचार का भी पालन करता है। इसकी शुरुआत हिंदू परंपरा के रूप में की गई थी किंतु बाद में इसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ गई है कि आज इसे सभी धर्मों की महिलाएं पहनने लगी हैं। कुर्ता–पायजामा, धोती, शेरवानी पुरुषों के परिधान हैं।

नृत्य, संगीत और कला

भारत 'अनेकता में एकता' की भूमि है और हमारे यहां विभिन्न शैली के नृत्य हैं। नृत्य के विभिन्न रूप लोक या शास्त्रीय के रूप में वर्गीकृत देश के विभिन्न हिस्सों से उत्पन्न होते हैं। यहां के कुछ लोकप्रिय नृत्यों में तमिलनाडु का भरतनाट्यम, केरल का कथाकली, आंध्रप्रदेश का कुचुपुडी, उड़ीसा का ओडिशी, असम का बीहू, राजस्थान का झूमर, उत्तर, पश्चिम और मध्य एशिया का कथक तथा पंजाब का भांगड़ा नृत्य हैं।

सांस्कृतिक धरोहर

हमारे देश में विश्व प्रसिद्ध स्थापत्य कला की अनूठी धरोहर है। यहां अनेक प्राचीन मंदिर, मस्जिद, किले और स्मारक शामिल हैं। ताजमहल, खजुराहो के मंदिर, कुतुब मीनार, जयपुर का हवामहल, मदुरै का मीनाक्षी मंदिर भारतीय स्थापत्य कला के द्वितीय उदाहरण हैं। ये ऐतिहासिक स्मारक न केवल भारत के समृद्ध इतिहास के साक्षी हैं, बल्कि देश–विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

हाथ से भोजन ग्रहण करना

भारत में हाथ से भोजन करने की प्रथा का प्रचलन है, भले ही कई लोगों को हाथ से खाना अच्छा नहीं लगता हो, लेकिन भारतीय अपनी तरह से भोज्य पदार्थों का स्वाद लेना पसंद करते हैं। इसके कई फायदे हैं। उँगलियाँ ऊष्मा ग्राही होती हैं जिससे गर्म भोजन से मुख के अंदर जलन कम होती है। भोजन से पहले आपको तापमान जांचना होता है। इसके अलावा, जब आप हाथों से भोजन करते हैं तो आप धीमी गति से भोजन करते हैं। इस प्रकार किया गया भोजन पाचन में सुगम होता है। परंपरागत रूप से भोजन के लिए आमतौर पर दायें हाथ का प्रयोग किया जाता है, क्योंकि बाएं हाथ को स्वच्छ नहीं माना जाता है। खाना खाने से पहले अपने हाथों को साबुन और पानी से अच्छी तरह धोना चाहिए। दक्षिण और पूर्वी भारत में हाथों से भोजन करना एक व्यापक प्रथा है। लेकिन उत्तर और पश्चिम भारत में यह थोड़ा दुर्लभ है। उत्तर और पश्चिम भारत में भोजन के लिए लोग चम्मच का उपयोग करते हैं।

उपरोक्त सभी बातें मिलकर भारत की संस्कृति को विश्व में अलग स्थान दिलाने में सहायक सिद्ध होती हैं। इन्ही की वजह से भारतीय संस्कृति आदरणीय है। आधुनिकता के इस दौर में भी हमें अपनी गौरवशाली संस्कृति और परंपराओं का सम्मान करते हुए इनका संरक्षण करना चाहिए।

–महाराम तंवर

सलाहकार (राजभाषा)

भुला दी गई प्रथाएँ

बालों में तेल लगाना : पहले शरीफ बच्चों की एक पहचान थी कि वे नहा कर नित्य बालों में तेल लगाएंगे। यही नहीं, स्कूल में भी इस बात की जांच होती थी। चमकदार कंघी किए हुए बाल दूर से ही चिल्लाकर किसी भी बच्चे के नहा धोकर आने का अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत करते थे। इसमें एक लाभ भी था। फिसलन की वजह से अच्छी पकड़ न बनने से कभी–कभी ये मास्टर जी के शिकंजे में आने से बच जाते थे। अब यह प्रथा लुप्त प्राय है।

मुर्गा बनना : आज के बच्चे संभवतः इस बात को नहीं मानेंगे कि कोई मनुष्य मुर्गा बन सकता है। किन्तु यह विलक्षण व दिव्य ज्ञान, विधाता ने केवल भारत वर्ष के अध्यापकों के लिए रखा था। दोनों हाथों को कलात्मक ढंग से टांगों के बीच से निकाल कर कानों को पकड़ने की अद्‌भुत विद्या सिखाने में उनकी महारथ थी। उस पर तुर्रा यह कि पीठ भी ऊंची होनी चाहिए। अगर कोई दुष्ट मौका देख कर पीठ नीची करता हुआ पकड़ा गया तो उसकी पीठ पर बस्ता रख दिया जाता था। कमर नीचे होते ही बस्ता जमीन पर गिर जाएगा और तुरंत विद्यार्थी की सेवा में उपस्थित होगा एक शानदार व जानदार डंडा। अगर कोई पीठ नीचे करने का सोचता भी था तो डंडे का ख्याल शरीर में एक नई स्फूर्ति का संचार करता था। जिसने इस सुख को भोग लिया वो और कोई भी व्यायाम नहीं करेगा। यह कला अब अस्त होने को है।

खुले में सोना : पहले गर्मियों में शिमला जाने का मज़ा रात को गर्म छत पर छिड़काव करके लिया जाता था। खुले में सोने का रिवाज़ था, सोने से कुछ पहले, दिन भर की तपती छत पर बाल्टियों से पानी छिड़का जाता था। फिर जो ठंडक उत्पन्न होती थी वो शिमला से कम थोड़े ही थी। इससे अधिक ना कोई सोच थी न साधन। जब छत तक लंबे तार का जुगाड़ कर पंखा लगाया जाता था, तो लगा जीते जी स्वर्ग मिल गया। पर पंखा कोई सिर्फ मेरे लिए थोड़े ही था, वो घूम कर जब मेरे सामने आयेगा तो ही हवा मिलेगी। सावन में कई बार आँख मिचौली होती थी, कुछ बूंदें पड़ी तो बोरी बिस्तरा समेत अंदर भागे, जब कुछ समय बाद लगा कि मेह बरसना बंद हो गया है तो फिर बाहर। कभी–कभी बादलों की गूंज व कालेपन का त्वरित विश्लेषण कर अंदाजा भी लगाया कि इनमें जान नहीं तो जब तक चद्दर पूरी गीली ना हो जाये पड़े रहो, शायद अंदर बाहर की कवायद बच जाये। अब बंद कमरे में कूलर, एसी की हवा में सोने वाले को छत का क्या पता?

गेहूं पिसवाना : पहले सफाई पर ज़ोर था, जो रोटी रोज़ दिन में तीन बार खानी है उसकी स्वच्छता से भला कैसे मुंह मोड़ा जा सकता था। सो पहले दुकान से गेहूँ खरीद कर लाये जाएँगे। उनको खुल्ले पानी से धोया जाएगा, फिर छत पर सूखने के लिए डाला जाएगा। अगर कोई पहरेदारी के लिए नहीं है तो गीली कनक पर एक चुन्नी ढक कर चारों कोनों से दबाया जाएगा जिससे पक्षी मुंह न मार सकें। एक घंटे बाद उसमें हाथ मारा जाएगा जिससे नीचे के गीले गेहूँ ऊपर आ जाएँ। सूखने के बाद उन्हे धुले कनस्तर में भर कर साइकल के पीछे बांध कर चक्की पर पिसवाने के लिए छोड़ा जाएगा। कुछ घंटे बाद चक्की के पत्थरों की रगड़ खाकर निकले गरमागरम चून को लाया जाएगा। इस प्रकार धुले गेहूँ की रोटी का आनंद लिया जाता था। किन्तु अब 10 मिनट डिलिवरी के जमाने में इतना झंझट कौन करेगा?

चपत लगाना : यह एक ऐतिहासिक प्रथा है जिसका उद्‌भव मानव जाति के जन्म के साथ ही हुआ था जो बहुत मायने में समाप्ति के कगार पर है। इस प्रथा के सभी लाभों को दर किनार कर इसे अमानवीय करार दिया गया है। चपत या मार के भी अपने आयाम हैं। इसमें दिमाग को तुरंत फूल स्पीड से दौड़ाने की क्षमता है। चपत एक अध्याय का अंत भी था, कोई शरारत की और चपत लग गई तो हिसाब खत्म। जब तक थप्पड़ ना पड़े मन भयाक्रांत रहता था। कक्षा में कुछ किया तो चमाट का डर। और ये डर खत्म होता है तमाचा लगने के बाद। ये पिछले कांड का पटाक्षेप भी था, यानि पापों की संध्या का अवसान अब पिछला हिसाब खत्म और नए उत्साह से अगले लक्ष्य के लिए मार्ग प्रशस्त। इससे बचने के लिए दिमाग विद्युत की गति से

सोचता है। वास्तव में यह एक उत्तेजक है। इसकी कल्पना मात्र सोच को आश्चर्य जनक रूप से तुरंत उठान के उस स्तर तक ले जा सकती है जहां आम तौर पर दिमाग नहीं जाएगा। मुझे विश्वास है गाँव–देहात में यह प्राचीन प्रथा अब भी किसी न किसी रूप में जीवित होगी।

– संजीव कुमार गोयल, वित्त अधिकारी

मस्तिष्क की संरचना व कार्य प्रणाली

यह शरीर की सबसे जटिल संरचना है। शरीर क्रिया विज्ञान के अनुसार मस्तिष्क के स्थूल रूप से प्रमस्तिष्क अनुमस्तिष्क तथा मस्तिष्क स्टेम के रूप में तीन उपविभाग किये गये हैं। पुनः प्रमस्तिष्क दो गोलार्धों बांया एवं दाया में विभाजित हैं। मोटे तौर पर बांया गोलार्ध शरीर के दायें भाग को तथा दांया गोलार्ध शरीर के बायें भाग को नियंत्रित करता है। प्रत्येक गोलार्ध का उपविभाजन भी निम्न प्रकार से हुआ है.

1. अग्र अथवा ललाट खण्ड

2. पार्श्वकपाल खण्ड

3. शंख खण्ड

4. पश्च कपाल

शरीर की ज्ञानेन्द्रियों की क्रियाओं का नियंत्रण एवं संपादन सभी खंडों द्वारा सम्मिलित रूप से किया जाता है। कर्मेन्द्रियों की क्रियाओं का नियंत्रण एवं संपादन अग्रखण्ड द्वारा किया जाता है। संवेदन तथा गतिवाही क्रियाएँ निम्न खण्डों से नियंत्रित होती हैः–

1. ताप, दबाव, दर्द, स्पर्श, एवं शारीरिक गति – ललाट खंड

2. दृष्टि संबंधी : पश्च खंड

3. श्रवण संबंधी तथा घ्राण (सूंघना) शंख खंड

4. वक्तृ (वाणी) चेतना प्रायः ललाट व पार्श्व खंड के निम्न भाग से नियंत्रित होती है।

संबंधित खंड के प्रेरक (नियंत्रक) क्षेत्र द्वारा शरीर के विभिन्न अंग प्रत्यंगों की पेशियों की गति संचालित होती है। मस्तिष्क के दायें अर्द्ध खण्ड में स्थित गतिबाही क्षेत्र में कुछ खराबी होने से शरीर के बायें अंगों में होने वाली ऐच्छिक क्रियाओं के संचालन एवं नियंत्रण का ह्रास होने लगता है। इसी प्रकार मस्तिष्क के बायें अर्द्ध खंड द्वारा शरीर के दायें अंगों में होने वाली ऐच्छिक क्रियाओं का संचालन व नियंत्रण होता है। इसी केन्द्र द्वारा हमारी इच्छायें कार्य में बदल जाती है। चलने की इच्छा करने पर यही केन्द्र चलने में भाग लेने वाली पेशियों को प्रेरक तंत्रिकाओं द्वारा संकुचन करने एवं शिथिल पड़ने के लिए बाध्य करता है। फलस्वरूप हमारे पैर आगे बढ़ते हैं और हम चलने लगते है।

प्रमस्तिष्क के संबंधित क्षेत्र किसी भी कारण से क्षतिग्रस्त होने पर उस नियंत्रण क्षेत्र से संबंधित ज्ञानेन्द्रियां कर्मेन्द्रियां सुन्न हो जाती हैं जिसे सन्निपात या लकवा भी कहते हैं ।

प्रमस्तिष्क का कार्य केवल ज्ञानेद्रियां एवं कर्मेन्द्रियों के क्रियाओं पर नियंत्रण तक ही सीमित नहीं है, वरन् तंत्रिका प्रवाहों को एक दूसरे से मिलाना, मिला कर उचित स्थान पर भेजना भी इसका एक महत्वपूर्ण कार्य है। विभिन्न तंत्रिका प्रवाहों के बीच संबंध स्थापित करने के फलस्वरूप ही मनुष्य सीखता, चिंतन करता तथा अन्य मानसिक क्रियाओं को संपन्न करता है।

प्रमस्तिष्क में 12 जोड़ी कपाल तंत्रिकाएं होती हैं जिनके कारण हम स्वाद, दृष्टि, श्रवण, गंध व स्पर्श का एहसास कर सकते हैं। हृदय की भांति मस्तिष्क में भी चार निलय (गुहा) होती हैं। ये चारों एक दूसरे से जुड़ी हैं। मस्तिष्क में स्थित चार निलय मस्तिष्क के भीतर गुहाएं हैं जो मस्तिष्क में द्रव का उत्पादन और भंडारण करती हैं। यह तरल हमारे मस्तिष्क के इर्द–गिर्द घेरा बनाकर उन्हें आघात से बचाता है। यह अपशिष्ट को हटाने और मस्तिष्क तक पोषक तत्व पहुंचाने के लिए भी जिम्मेदार है। ये चारों निलय केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (सीएनएस) को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं, जिसमें हमारी मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी

शामिल हैं। सीएनएस वह जगह है जहां शरीर में जानकारी संसाधित की जाती है।

अनुमस्तिष्क (छोटा मस्तिष्क) : यह ब्रेन स्टैम व प्रमस्तिष्क के मध्य संपर्क सूत्र का कार्य करता है। इसे नाड़ी ग्रंथियों का मुखिया कहा जाता है। यह ब्रेन स्टेम से आने वाले संदेशों का सम्पादन कर प्रमस्तिष्क को भेजता है। इसी प्रकार ऊपर से आने वाले आदेशों को ये नीचे भेजता है। यह अंगों की गतिविधियों की सटीकता के लिए जिम्मेदार होता है।

ब्रेन स्टैम : इसमें तीन भाग होते हैं – मज्जका, पोंस और मिडब्रेन

मज्जका में तीन महत्त्वपूर्ण नियंत्रण केंद्रक होते हैं जैसे निगलना, लार स्रवण, वमन, खांसी, भवसन, हृदय गति, रक्त चाप आदि, 12 में से लगभग 6 तंत्रिकाओं के केंद्रक इसमें स्थित होते हैं।

पोंस में शरीर से आने वाली तंत्रिकाएं अपना स्थान बदलती है अर्थात दायें वाली बाईं तरफ व बाईं वाली दायीं तरफ चली जाती है। इसी कारण मस्तिष्क का नियंत्रण शरीर के विपरीत दिशा में होता है। चूंकि पोंस गर्दन के ऊपर स्थित होता है तो यह नियम उन नियंत्रकों पर लागू नहीं होता जो ऊपर कपाल में स्थित होते हैं अर्थात दायीं आँख, कान का इलाज उसी ओर होगा।

मिड ब्राइन ब्रेन स्टेम का सबसे छोटा हिस्सा लगभग 2 सैंटी मीटर होता है। यह दृष्टि व श्रवण संबंधी कार्य सम्पादन करता है। यह सतर्कता, भवास, मन, पीड़ा इत्यादि के प्रबंध में भी सहयोग करता है। इसीलिए आंखे ठीक होने पर भी सिर के पिछले भाग में चोट लगने पर व्यक्ति अंधा हो सकता है।

खोपड़ी के केंद्र में जहां प्राय शिखा रखी जाती है वह सहस्त्रार चक्र का स्थान है उस स्थान को 'अधिपतिमर्म' कहते हैं। यह तन का सबसे संवेदनशील हिस्सा होता है। इसे पिंड (मानव) व ब्रह्मांड का संपर्क सूत्र भी कहा जाता है। यहीं से ऊर्जा का शरीर में प्रवेश होता है। यहीं सुषुम्ना नाड़ी समाप्त होती है। जब मनुष्य कोमा में होता है तो शरीर का नियंत्रण 'ब्रेन स्टेम' के पास आ जाता है।

– संजीव कुमार गोयल, वित्त अधिकारी

विलुप्त संस्कृति

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। परंपराओं, रीति–रिवाजों, भाषाओं, त्योहारों, संगीत, नृत्य और स्थापत्य कला के माध्यम से यह संस्कृति हजारों वर्षों से फली–फूली है। यह तो नहीं कह सकते कि हम अपनी संस्कृति और सभ्यता को पूरी तरह से भूल चुके हैं, पर आधुनिकता के इस दौर में तेजी से हो रहे सामाजिक और तकनीकी परिवर्तन का प्रभाव हमारे सांस्कृतिक मूल्यों तथा विरासत पर निश्चित रूप से पड़ रहा है। किंतु वर्तमान वैश्वीकरण, आधुनिकता तथा पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में भारतीय संस्कृति धीरे–धीरे लुप्त होने की कगार पर है। आधुनिकता का सबसे अधिक प्रभाव हमारी युवा पीढ़ी और पर्यावरण पर पड़ा है।

रोशनी के लिए पहले घरों में डिबिया और लालटेन का उपयोग किया जाता था। खेती पारंपरिक तरीकों से की जाती थी, गलियां कच्ची और कीचड़ से लथपथ रहती थीं। सिंचाई के लिए रहट का उपयोग किया जाता था। मुझे याद है गांव में चौकीदार के पास मोटा सा जन्म–मृत्यु पंजीकरण रजिस्टर होता था जिसमें नवजात और स्वर्गवासी लोगों का लेखाजोखा लिखा जाता था। मैंने भी इस कार्य में योगदान दिया था। आज ऐसा नहीं है, उन्नत प्रौद्योगिकी के कारण अब यह कार्य ऑनलाइन किया जा रहा है। अब बिजली भी है, हल की जगह ट्रैक्टर, हैरों और अन्य कृशि उपकरण तथा सिंचाई के लिए ट्यूबवैल और अन्य उन्नत तकनीकें हैं। पक्की गलियां और नालियां हैं। प्राथमिक अथवा मिडिल स्तर के स्कूल 12वीं तक हो गए हैं। ग्रामीणों को जल जीवन मिशन के तहत सरकार की 'हर घर नल से जल' योजना का लाभ मिल रहा है। गांव में आंगनवाड़ी केंद्र खुल गए हैं। बच्चों की संक्रमण से प्रतिरक्षा हेतु नियमित टीकाकरण किया जा रहा है। गाँव की तरक्की देखकर मन उल्लास से भर जाता है। निःसंदेह विज्ञान और तकनीक के सामंजस्य ने जीवन स्तर में सुधार किया है।

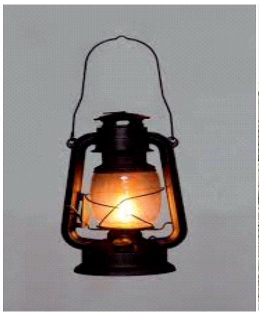

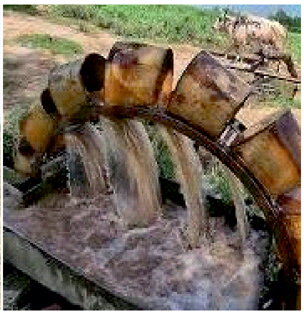
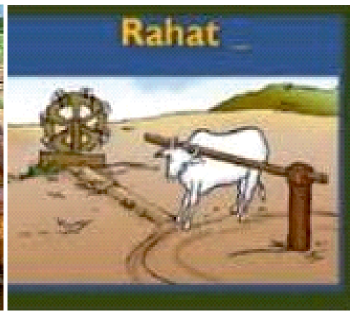

समय की मांग के अनुसार परिवर्तन आवश्यक है, 19वीं से 20वीं शताब्दी में हम सभी ने शासन संचालन, सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा, प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन देखें हैं। लड़कियां शिक्षा, व्यवसाय, उद्योग के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु स्वास्थ्य और सुरक्षा के क्षेत्र में भी अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। इसका उदाहरण हम कोरोनो काल में देख चुके हैं। इस महामारी ने बहुत बड़ी संख्या में लोगों की जानें ली, कितने बेरोजगार किए और कितनो के घरों को उजाड़ दिया, इतना कुछ होने के बावजूद, हिंदुस्तान ने हार नहीं मानी और इस विपदा की घडी में हमारे वैज्ञानिकों ने दिनरात मेहनत कर कोरोनो वैक्सीन का आविष्कार कर विश्व के कई जरुरतमंद देशों को वैक्सीन भेजकर आपदा की घड़ी में सहायता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। निःसंदेह विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्व के लिए वरदान हैं।

पर क्या हमने कभी सोचा है कि इस उन्नति की दौड़ में कितना कुछ पीछे रह गया है? एक कोना ऐसा भी है जो पुरानी यादों में खो जाता है – जाने कहाँ गए वो दिन। आज से 50 साल पहले की वेशभूषा, खान–पान, रहन–सहन में कितना बदलाव आ गया है। धोती–कुर्ता, पायजामा, लुंगी–लहंगा, चोली–घाघरा, ओढ़नी,

अंगोछा, पगड़ी–साफा, टोपी, खड़ाऊं, मोजड़ी, सूती या खादी के कपड़ों के स्थान पतलून, लोवर, कोट पेंट, एग्लो इंडियन पहनावा आ गया है। हलधर के लिए लूनी घी में तैयार चटनी, राबड़ी या मेहरी के साथ घर में हाथ से चक्की चलाकर पीसे गए आटे से गोचनी (गेहूं और चना का मिश्रित आटा) की रोटियों वाला कलेवा अब मानो खान–पान की दुनिया से गायब हो गया है। अतिथि सत्कार की बात करुं तो निश्चल प्रेम और सम्मान का वर्णन शब्दों में करना कठिन होगा। जमीन पर पोंछा लगाकर गंगाजल की बूंदो से स्वच्छ कर बीजने से हवा करते हुए तांबे के बर्तन में भोजन और गंगासागर से जलपान करवाया जाता था। आज जूते पहनकर खड़े–खड़े भोजन किया जाता है। सादा पोश्टिक भोजन छोड़कर फॉस्ट फूड ज्यादा पसंद किया जा रहा है। दिनभर खेत खलिहानों में काम की थकावट दूर करने के लिए बुजुर्ग गांव की चौपाल पर हुक्का पीते थे और हंसी मज़ाक करते थे। तीज–त्यौहारों पर मल्हार, रागिनी, लोकगीत गाए जाते थे।

कुछ समय पहले तक रेडियो और टेपरिकार्डर के स्थान पर ब्लेक एंड व्हाइट टीवी थे। अब बड़े–बड़े रंगीन टेलीविज़न और सीडी प्लेयर आ गए हैं। पहले शिक्षा के प्रति उत्साह बहुत कम था, फिर भी स्कूल के मास्टर जी जब गांव का दौरा करने आते थे, तो उनके सम्मान में बच्चे, बूढ़े और जवान सभी हाथ जोड़ कर नमस्ते अथवा चरण स्पर्श करते थे। स्कूल में गुरु–शिष्य परंपरा विद्यमान थी। अब यह नदारद है।

आज अंग्रेजी को ज्यादा महत्व दिया जा रहा है और हिंदुस्तान की पहचान हिंदी पीछे छूटती जा रही है। बदलते समय के साथ लोग अपने संस्कार और मर्यादा को पीछे छोड़ते जा रहे हैं। पश्चिमी देशों के रहन–सहन, खानपान, पहनावे से प्रभावित हो कर आज बच्चों को हिंदी बोलनी आए या नहीं आए, मगर अंग्रेजी ना बोलनी आए तो शर्मिन्दगी महसूस करते हैं। सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए। पर क्या इसका ये अर्थ है कि हिंदी अथवा अन्य भाषा बोलने वाले किसी से कम हैं, हरगिज़ नहीं। अंग्रेजी अपनाने की अंधाधुंध दौड़ में हम अपनी मातृभाषा और देहाती बोली की बलि दे रहे हैं। आज़ादी के नाम पर संस्कार और मर्यादा की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। अब नमस्ते, राम–राम, राधे–राधे और चरण स्पर्श का स्थान हॉय, हैलो ने और बापू का डैड ने ले लिया है। हम क्यों भूल जाते हैं कि सेहत के लिए शरीर का झुकना कितना आवश्यक है। दिन में दो–तीन बार चरण स्पर्श करने से हमें मेरुदंड संबंधित समस्याएं नहीं होंगी और साथ ही बड़ों का आशीर्वाद भी प्राप्त होगा।

एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को मर्यादा और संस्कार देती है। हमारे देश की संस्कृति और सभ्यता विश्व में प्रचीनतम और विविधता में एकता का प्रतीक है। यहां अनेक धर्म, जाति, वर्ग, पंथ, वेशभूषा, भाषा और परंपराएं हैं। ऋग्वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण जैसे ग्रंथ भारतीय जीवन की मूल भावना को दर्शाते हैं। योग, आयुर्वेद, वास्तुकला और शास्त्रीय संगीत जैसी धरोहर दुनियाभर में प्रसिद्ध हैं। विडंबना देखिए, जहां आज विश्व के कई देशों में भारतीय संस्कृति को बढ़ावा दिया जा रहा है, वहीं हम अपनी संस्कृति और नैतिक मूल्यों का पतन कर रहे हैं। हममें से कितने ऐसे हैं जो रामायण की चौपाईयों का नित–प्रतिदिन पाठ करते हैं। कितनी ऐसी बेटियां हैं जिन्हें चूल्हे पर आज भी खाना बनाना नहीं आता। कितने ऐसे घर हैं जो 'अतिथि देवो भवः और 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता' की भावना से ओतप्रोत हैं। प्राचीन भारतीय

परंपरा के अनुसार सामूहिक भोज बैठा कर खिलाने की व्यवस्था थी क्यूंकि सामाजिक सम्मान और स्वास्थ्य की दृष्टि से यह सबसे ज्यादा उपयुक्त समझी जाती थी। पंगत में बैठकर भोजन ग्रहण करना एक व्यवस्था ही नही अपितु गहरे अपनेपन, प्रेम, सामजिक सौहार्द का प्रतीक भी है। आज डाइनिंग टेबल पर जूते उतारे बिना ही भोजन किया जाने लगा है। महिलाएं और लड़कियां चुनरी, दुपट्टे का प्रयोग करने से परहेज कर रही हैं। वहीं दूसरी ओर मुस्लिम समाज की औरतें बुरका पहनती हैं तो सिख समुदाय की औरतें आज भी सिर पर पल्लू रखती हैं। समझ में आता है इस भागदौड़ और एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में संभवतः कुछ लोग ऐसा नहीं सोचते हों, पर क्या इनमें हमारे नैतिक मूल्यों और प्राचीन परंपराओं को जीवंत रखने की शिक्षा प्रतिबिंबित नहीं होती है। वास्तव में, हम अपनी सभ्यता और संस्कृति को भूलते जा रहे हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस ने तो कमाल ही कर दिया है। ऐसा लगता है यह किसी रोबोट से कम नहीं है जिसमें अदभुत प्रोग्रामिंग की गई हो। स्कूलो में शिक्षण पद्धति देखिए, बस्ते के बोझ से छोटे बच्चों की क्या दशा होती होगी, इससे हम सभी परिचित हैं। इसमें भी आर्टिफि ायल इंटेलीजेंस की भूमिका जल्दी ही दिखाई देगी। टाइपराइटर के स्थान पर मोबाइल फोन, कंप्यूटर और लेपटॉप का आगाज़ तकनीक और प्रौद्योगिकी के विकास से संभव हुआ है, वहीं दूसरी ओर वायरस के खतरनाक जोखिम भी अपनी भूमिका निभाने में किसी से पीछे नहीं हैं और आपके डेटा की चोरी करने में सक्रिय हैं। सूचना प्रौद्योगिकी की दशा और दिशा में भारत विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का समाधान खोजने में सफलता प्राप्त कर रहा है, इसीलिए, आज दुनियाभर में भारत के आईटी प्रोफेशनल की तूती बोल रही है।

मैंने अपने पूर्वजों के बहुत से स्मृति चिह्न आज भी संजोकर रखे हैं। नई पीढ़ी के लिए यह आश्चर्य से कम नहीं है क्योंकि उन्हें इनके विषय में जानकारी नहीं दी गई है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हमें लुप्तप्राय भारतीय विरासत, संस्कृति और परंपराओं की रक्षा करनी है।

उपसंहार

भारतीय संस्कृति सिर्फ हमारी धरोहर नहीं बल्कि हमारी पहचान है। आयुर्वेद और वेदों की दृष्टि से दुनिया भारत का लोहा मानती है। यह हमारे ऋषि–मुनियों ने सिद्ध किया है। शौर्य, त्याग, बलिदान ओर सेवा भाव में हम किसी से पीछे नहीं हैं। हमें अपनी परंपराओं, मूल्यों और संस्कारों की रक्षा करने के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे। आधुनिकता का स्वागत करते हुए अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहना ही सच्ची प्रगति है। 'पधारो म्हारे देस' ये चंद शब्द दुनियाभर में राजस्थानी लोकगीत की धुन बजा रहे हैं। यही तो है संस्कृति संरक्षण। इसी प्रकार हमें भारत की प्राचीनतम संस्कृति को पुन जीवित करना होगा। यदि समय रहते पयर्टन एवं संस्कृति मंत्रालय ने भारतीय संस्कृति और विरासत के संरक्षण एवं जीवंत करने के लिए कदम नहीं उठाये, तो हमारी यह अमूल्य धरोहर आने वाली पीढ़ियों के लिए केवल इतिहास के पन्नों में सिमटकर रह जाएगी।

–महाराम तंवर, सलाहकार (राजभाषा)

कुंभ मेला

भारतीय संस्कृति संसार की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति कर्म प्रधान संस्कृति है। भारत में बोली जाने वाली विविध भाषाओं ने यहाँ की संस्कृति और पारंपरिक विविधता को बढ़ाया है। ग्रामीण क्षेत्रों में, परिवार की तीन या चार पीढ़ियों का एक ही छत के नीचे रहना पारिवारिक महत्व एवं अपनेपन की संस्कृति की एक झलक है, जहां कई पीड़िया एक ही परिवेश मे रहकर संस्कार, सामाजिक ज्ञान एवं अपनी भाषा का परिचय देते है। व्यक्ति का खाना, पहनना, बोलने की भाषा, भगवान की पूजा उपासना ये सभी संस्कृति के पक्षकार है। भारतीय संस्कृति हमें अपने पूर्वजों से मिली समाज का अभिन्न अंग है। विरासत में प्राप्त संस्कृति एक स्थान से दूसरे स्थान में भिन्न–भिन्न होती है, जिसका प्रमाण हमारे देश की कहावत है – 'जैसा देश वैसा भेष' में दिखाई देता है।

भारतीय संस्कृति में धर्म, वास्तुकला, साहित्य, भाषा इत्यादि कई ऐसे तत्व हैं जो हमें भारतीय संस्कृति की विविधता को समझने में मदद करते हैं। भारतीय संस्कृति में धर्म या जाति के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता। यह कर्म, त्याग और तपस्या पर बल देती है। भारतीय संस्कृति में विविधता में एकता है। यह साहित्य, कला, संगीत, नाटक, रीति–रिवाजों में साफ़ दिखती है। भारतीय संस्कृति में जीने की कला, विज्ञान और राजनीति का विशेष स्थान है जो भिन्न–भिन्न स्थानों और परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न है, परन्तु इसमें समाज के सभी वर्गों के लिए समानता का आदर निहित है।

भारत की संस्कृति बहुआयामी है। प्राचीन ग्रन्थ, मंदिर, मठ एवं प्राचीन समय से चली आ रही धार्मिक आस्था भारतीय समाज और संस्कृति की पहचान व्यक्त करती है। किसी समाज की सांस्कृतिक विरासत उसके मूल्यों, परंपराओं और साझा अनुभवों की परिणति है जो एकता और उद्देश्य की भावना को बढ़ावा देती है। भारत कई धार्मिक प्रणालियों जैसे सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म, सिंधी धर्म धर्मों का जनक है। परन्तु भारतीय संस्कृति का मुख्य केंद्र बिंदु हिंदू धर्म और समाज है जो सिर्फ एक धर्म, नहीं बल्कि व्यापक अथाह जीवन शैली है। भारतीय संस्कृति का सिद्धांत वसुधैव कुटुंबकम के मूल मंत्र में निहित है।

पवित्र मंदिर, स्तम्भ, ग्रन्थ भारत की सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं। ये मंदिर कला, शिक्षा, आध्यात्मिकता और संस्कृति के भी केंद्र हैं जो भारत के व्यापक इतिहास का प्रतीक हैं ।

भारत में मेले, सम्मलेन, सामूहिक कार्यक्रम हमेशा से ही समाज के उत्थान एवं हितार्थ रहे हैं, जो भारतीय संस्कृति की विरासत का बखान करते रहे हैं। ऐसा ही कुंभ मेला है जो संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ घड़ा अथवा कलश है। कुंभ भारतीय संस्कृतियों का संगम है और आध्यात्मिक जागृति का प्रतीक भी है। कुंभ गंगा, यमुना और सरस्वती जैसी पवित्र नदियों का संगम हैं जहां तीर्थयात्री पावन स्नान/डुबकी लगाने के लिए एकत्रित होते हैं।

कुंभ उत्सव ज्ञान, तपस्या और भक्ति का त्योहार है। हर धर्म और जाति के लोग यहां किसी न किसी रूप में मौजूद होते हैं जो मिनी इंडिया का रूप ले लेता है। कुंभ में विभिन्न प्रकार की भाषाएँ, परंपराएँ, संस्कृतियाँ, कपड़े, भोजन और रहन–सहन के तरीके देखे जा सकते हैं।

1. माघ मेला प्रयागराज में माघ महीने के दौरान आयोजित होने वाला एक वार्षिक आयोजन है। यह प्रति वर्ष आयोजित किया जाता है।
2. अर्ध कुंभ हर छठे वर्ष केवल हरिद्वार और इलाहाबाद में आयोजित किया जाता है।
3. पूर्ण कुंभ प्रत्येक 12 साल में आयोजित किया जाता है। हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक और उज्जैन के बीच स्थान बदलता रहता है। उज्जैन में आयोजित होने वाला कुंभ मेला सिम्हस्थ कुंभ के नाम से भी

जाना जाता है। सिम्हस्थ कुंभ के दौरान तीर्थयात्री शिप्रा नदी में पवित्र डुबकी लगाकर आस्था एवं संस्कृति का परिचय देते है।

4. महाकुंभ प्रयागराज में आयोजित होने वाला सबसे दुर्लभ और सबसे महत्वपूर्ण कुंभ मेला प्रत्येक 144 वर्षों के बाद आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर भक्त तीर्थयात्रियों के व्यापक समागम के साथ गंगा नदी के तट पर एक विशाल मेला आयोजित किया जाता है। 21वीं सदी का महाकुंभ प्रयागराज में मनाया गया।

महाकुंभ एक अद्वितीय धार्मिक और सांस्कृतिक अनुभव है जो न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण दुनिया में हिंदू धर्म के महत्व को प्रदर्शित करता है। यह आयोजन न केवल आध्यात्मिक उन्नति के लिए होता है, अपितु समाज में एकता और भाईचारे को बढ़ावा देने का भी कार्य करता है। महाकुंभ के समय श्रद्धालुओं की भावनाएं धर्म के प्रति समर्पण और भारतीय संस्कृति का अद्वितीय दृश्य किसी को भी मंत्रमुग्ध कर देता है।

भारतीय संस्कृति में मान्यता है कि गंगा में स्नान करने से व्यक्ति अपने पिछले पापकर्मों से मुक्त हो जाता है और वह जन्म–मरण के चक्र से मुक्ति पाने का पात्र बन जाता है। इतिहास में लिखा है कि मनस्वी लोग अपने प्राणो को तो सुख के साथ छोड़ देते हैं किन्तु अपनी संस्कृति, मान–मर्यादा को नहीं छोड़ते।

संस्कृति समय अनुसार बदलती रहती है। यह गतिशील है परन्तु समाज के लिए आदर्शवादी है। संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति हमारे देश की पहचान है जिसमें समृद्धि, संवेदनशीलता और एकता का आभास होता है। यहां प्रत्येक धरोहर, रीति–रिवाज और परंपरा भारतीय जीवन के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में मानी जाती है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ नष्ट होती रही हैं किंतु भारत की संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व सहित अजर–अमर बनी हुई है।

–राजेश कुमार, प्रलेखन सहायक

प्राकृतिक घड़ी और शरीर का संबंध

क्या हमने कभी अपने व्यस्त जीवन से कुछ पल निकालकर अपने शरीर के बारे में सोचने की कोशिश की है? यह शरीर जो प्रकृति की एक अद्भुत और अनमोल देन है, हर पल चुपचाप अपना काम करता रहता है। अगर ध्यान से देखा जाए, तो शरीर का हर अंग, आँख, कान, मस्तिष्क, दिल, फेफड़े और किडनी, आदि बिना किसी चूक के अपने–अपने कार्यों को निभा रहे हैं। क्या यह प्रकृति की एक अद्भुत रचना नहीं है।

लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि अगर शरीर का कोई भी अंग अपना कार्य करना बंद कर दे, तो क्या होगा? दिल धड़कना बंद कर दे, आँखें देखना बंद कर दें, या फेफड़े सांस लेना बंद कर दें, तो ऐसी स्थिति में जीवन ठहर जाएगा। इसलिए कहा गया है : पहला सुख निरोगी काया, क्योंकि शरीर ही वह माध्यम है जिससे हम अपने जीवन के हर अनुभव को जीते हैं।

स्वस्थ शरीर की आवश्यकता

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमें यह समझना होगा कि इसे क्या चाहिए। हमारे शरीर को ऊर्जा, आराम, और सही देखभाल की आवश्यकता होती है। ऊर्जा हमें भोजन से मिलती है, आराम हमें नींद से मिलता है, और देखभाल के लिए हमें व्यायाम और योग जैसी गतिविधियों को अपनाना चाहिए। लेकिन आज की तेज़ रफ्तार जिंदगी में हम इन ज़रूरी बातों को अनदेखा कर रहे हैं। हमारे पूर्वज शारीरिक और मानसिक रूप से हमसे कहीं अधिक स्वस्थ थे। उनके जीवन का तरीका, दिनचर्या, और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग उनके स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक थे। मिट्टी के बर्तनों में खाना पकाना, तांबे के बर्तनों में पानी पीना, और सूरज ढलने से पहले खाना खा लेना उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। ये सब बातें वैज्ञानिक रूप से भी सही साबित होती हैं।

आधुनिक जीवनशैली और उसका प्रभाव

आज की जीवनशैली ने हमें शारीरिक और मानसिक दोनों ही रूपों से कमजोर बना दिया है। तनाव, अनियमित खानपान, और अस्वस्थ दिनचर्या ने हमें बीमारियों की ओर धकेल दिया है। जहां पहले लोग प्राकृतिक संसाधनों का सहारा लेते थे, वहीं आज हम प्रोसेस्ड फूड, देर रात तक जागना और दिनभर की भागदौड़ में अपनी सेहत को नजरअंदाज कर रहे हैं।

स्वास्थ्य के लिए कदम

हमें अपने शरीर की प्रकृति को समझने और उसके अनुसार काम करने की आवश्यकता है। आयुर्वेद और योग का सहारा लेकर हम अपनी जीवनशैली को बेहतर बना सकते हैं। निम्नलिखित सुझाव आपको शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं:

समय पर सोना और उठना

- सूर्योदय के समय उठने की आदत डालें। इससे शरीर की प्राकृतिक घड़ी संतुलित रहती है।
- रात को जल्दी सोएं और सोने से पहले स्क्रीन (मोबाइल, लैपटॉप) का उपयोग बंद करें।

प्राकृतिक भोजन

- ताजा, मौसमी, और कम प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का सेवन करें।
- प्रोसेस्ड फूड और अत्यधिक तले हुए भोजन से बचें।
- भोजन में सलाद, फल और हरी सब्जियों को शामिल करें।

शारीरिक गतिविधियां

- रोजाना कम से कम 30 मिनट व्यायाम करें।
- योग, प्राणायाम, और ध्यान को दिनचर्या में शामिल करें।
- पैदल चलने या साइकिल चलाने की आदत डालें, खासकर छोटे सफर के लिए।

आराम और ध्यान

- रोजाना 6–8 घंटे की पर्याप्त नींद लें।
- दिनभर की भागदौड़ के बाद अपने मस्तिष्क को आराम देने के लिए ध्यान और गहरी सांस लेने की तकनीक अपनाएं।
- हफ्ते में एक बार डिजिटल डिटॉक्स (मोबाइल, टीवी आदि से ब्रेक) करें।

जल का सही उपयोग

- सुबह खाली पेट तांबे के बर्तन में रखा पानी पीएं।
- पर्याप्त मात्रा में पानी पीएं लेकिन भोजन के तुरंत पहले या बाद में पानी पीने से बचें।

सही दिनचर्या अपनाएं

- भोजन, व्यायाम, और सोने का समय निश्चित करें।
- भारी भोजन रात में करने से बचें, रात का खाना हल्का और जल्दी खाएं।

तनाव प्रबंधन

- तनाव कम करने के लिए ध्यान, संगीत सुने अथवा प्राकृतिक स्थानों पर समय बिताएं।
- अपनी दिनचर्या में छोट–छोटे ब्रेक लें और खुद को आराम दें।

प्राकृतिक उपचार

- छोटी–मोटी बीमारियों के लिए आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों का उपयोग करें जैसे अदरक, हल्दी और तुलसी।
- हर्बल चाय और देसी नुस्खें अपनाएं।

स्वच्छता बनाए रखें

- शरीर और आसपास की स्वच्छता पर ध्यान दें।
- खाने से पहले और बाद में हाथ धोने की आदत डालें।

सकारात्मक दृष्टिकोण

- सकारात्मक सोच और आशावादी दृष्टिकोण अपनाएं।
- अपनी उपलब्धियों का जश्न मनाएं और हर दिन के लिए आभार व्यक्त करें।

सामाजिक संपर्क

- परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताएं।
- सामाजिक गतिविधियों में भाग लें ताकि मानसिक स्वास्थ्य बेहतर हो सके।

धूप का सेवन

- रोजाना कुछ समय के लिए धूप में बैठें। इससे विटामिन डी का स्तर बढ़ता है और इम्यून सिस्टम मजबूत होता है।

संगीत और कला से जुड़ें

- संगीत सुनने या गाने की आदत डालें।

  कला और रचनात्मक गतिविधियों में भाग लें, जो मानसिक शांति प्रदान करती हैं। इन छोटे–छोटे उपायों को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाकर आप अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं। यह कठिन काम नहीं है। बस इसके लिए शुरुआत करनी होगी और दृढ़ निश्चय रखना होगा।

स्वयं को जानें

यह लेख आपको जागरूक करने का प्रयास मात्र है। हर व्यक्ति अपने शरीर को सबसे बेहतर समझता है। आयुर्वेदिक विशेषज्ञों या चिकित्सा के माध्यम से आप अपने शरीर की प्रकृति को समझ सकते हैं। आज ही एक नई शुरुआत करें और अपने शरीर और मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें। स्वस्थ शरीर और मस्तिष्क के बिना जीवन अधूरा है। इसलिए इसे प्राथमिकता बनाएं और प्रकृति की इस अनमोल देन का सम्मान करें।

यह लेख मात्र विचार करने के लिए है। अपने स्वास्थ्य संबंधी किसी भी निर्णय से पहले विशेषज्ञ की सलाह अवश्य लें।

–मोहित कुमार वत्स, सोफ्टवेयर डेवलपर

दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र नगरपालिका ठोस अपशिष्ट : पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव

दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के निकटवर्ती शहरी क्षेत्रों से निर्मित भारत का राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) देश के सबसे बड़े वाणिज्यिक और आवासीय केंद्रों में से एक है। इससे भारी मात्रा में म्यूनसिपेलिटी सॉलिड वेस्ट (एमएसडब्ल्यू) का उत्पादन होता है जो पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा है। दिल्ली में चार लैंडफिल साइट हैं – भलस्वा लैंड फिल साइट, गाज़ीपुर लैंड फिल साइट, ओखला लैंड फिल साइट और तेहखंड। हालाँकि, ये क्षेत्र दिल्ली–एनसीआर के एमएसडब्ल्यू उत्पादन के सामने अतिसंतृप्त हैं। दिल्ली में मौजूदा एमएसडब्ल्यू संग्रहण और हैंडलिंग प्रणालियाँ नए ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के अनुपालन के लिए अपर्याप्त लगती हैं। 2050 तक, शहरी भारत प्रति दिन लगभग 11,95,000 टन (टीपीडी) उत्पन्न कर सकता है। एमएसडब्ल्यू का एक बड़ा हिस्सा प्लास्टिक से बना है और इसका अधिकांश भाग पुनर्चक्रण नहीं किया जाता है। एमएसडब्ल्यू के लिए भारत सबसे बड़े कुप्रबंधित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रदूषकों की वैश्विक सूची में 12वें स्थान पर है (जैम्बेक, एट ऑल.2015)। भारत लगभग 16.5 मिलियन टन प्रति वर्ष प्लास्टिक का उत्पादन करता है। इस प्लास्टिक की एक बड़ी मात्रा पुनर्चक्रित नहीं की जाती है तथा प्लास्टइंडिया फाउंडेशन के शोध के अनुसार, भारत में उत्पादित कुल प्लास्टिक कचरे का 80 प्रति ात त्याग दिया जाता है। प्लास्टिक की लोकप्रियता इसकी आर्थिक उपयोगिता के कारण है। प्लास्टिक सस्ता उत्पाद है जो अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में कई उद्देश्यों को पूरा करता है। लैंडफिल साइट अर्थात ओखला डंपसाइट में माइक्रोप्लास्टिक के बारे में बताया गया है, जहां एमएसडब्ल्यू ओपन डंपसाइट के खनन से मिट्टी जैसी सामग्री (एसएलएम) प्राप्त होती है (हर्टिवाल एट ऑल–2023)। लैंडफिल साइट से प्राप्त एमपी आसपास के वातावरण में स्थानांतरित हो सकते हैं और बारिश तथा माइक्रोबियल लीचिंग द्वारा मिट्टी और भूमिगत जल को दूषित कर सकते हैं।

इसके निपटान को कम करने के लिए एमएसडब्ल्यू का पृथक्करण और पुनर्चक्रण आवश्यक है। एमएसडब्ल्यू प्रसंस्करण, पुनर्चक्रण, कम करने और पुनः उपयोग के लिए खाद, जीवाश्मीकरण तथा जैवमीथेनेशन जैसी कई विधियों की आवश्यकता होती है। एमएसडब्ल्यू से संबंधित क्षेत्र असंगठित है जिसमें निजी कंपनियां, कूड़ा अर्थात कचरा बीनने वाले, कबाड़ीवाले, कूड़ा पुनर्चक्रण करने वाले और गैर–सरकारी संगठन शामिल हैं, जिन्हें एक व्यवस्थित कार्यात्मक इकाई में एकीकृत करने की आवश्यकता है। वायु प्रदूषण में खुले में कचरा जलाने का महत्वपूर्ण योगदान है। 20 अप्रैल 2022 से 8 मई 2022 तक भलस्वा लैंडफिल में भीषण आग लगने के कारण पीएम 2.5 की सांद्रता बढ़कर 107.32 और पीएम 10 की सांद्रता 338 – जेम 3 हो गई। ऐसी दुर्घटनाओं से पीएम 2.5 की सांद्रता 45.55 प्रति ात और पीएम10 की सांद्रता 40.50 प्रति ात बढ़ जाती है। निलंबित कणों की ये खतरनाक सांद्रता उन लोगों के लिए खतरा हो सकती है जिन्हें भवसन संबंधी समस्याएं हैं। दिल्ली और एनसीआर में उत्पन्न एमएसडब्ल्यू के आधिकारिक रिकॉर्ड में 11000 टन कचरा दिखाया गया है, जिसमें से 3800 टन अनुपचारित है। हालाँकि, फ़रीदाबाद और गुरुग्राम के मामले में 1000 टन और 1200 टन एमएसडब्ल्यू उत्पन्न होता है, जिसमें से 240 टन और 150 टन संसाधित किया जाता है। मौसमी बदलाव के साथ, दिल्ली और एनसीआर की वायु गुणवत्ता खतरनाक स्थिति में चली जाती है और एमएसडब्ल्यू प्रमुख योगदानकर्ताओं में से एक है क्योंकि अपशिष्ट क्षरण के कारण मीथेन गैस उत्पन्न होती है। जब तापमान 45.48 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तो मीथेन गैस आसानी से आग पकड़ लेती है और गर्मियों के दौरान दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से ऊपर बढ़ जाता है। टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल तरीके से एमएसडब्ल्यू को कम करने के लिए व्यापक और प्रभावी रणनीतियों के विकास की आवश्यकता है जिसमें तकनीकी समाधान और सार्वजनिक जागरूकता पहल शामिल हैं। एमएसडब्ल्यू में मौजूद एमपी को रोगाणुओं (बैक्टीरिया और कवक) और बायोरेमेडिएशन द्वारा कम किया जा सकता है। गाज़ीपुर लैंडफिल से लीचेट का विश्लेषण

किया गया और इसमें लीचेट और भूजल में कुल कोलीफॉर्म और मल कोलीफॉर्म दिखाया गया जो चिंता का विषय है (मोर एट ऑल.2024)। एमएसडब्ल्यू लीचेट से भूजल प्रदूषण को कम करने के लिए लैंडफिल प्रबंधन के अध्ययन हैं (आलम एट ऑल.2024)। लगातार बढ़ती एमएसडब्ल्यू में माइक्रोप्लास्टिक की मौजूदगी, वायु गुणवत्ता और मानव स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव प्रमुख चिंताएं हैं जिन्हें सरकार और समाज को हल करने की आवश्यकता है।

–डॉ. इंदु कुमारी, डेटा क्यूरेटर

मंथन

आज जब घर से निकला तो बहुत देर हो चुकी थी, मेरी गाडी लेट थी। रात हो जाने की वजह से कोई कैब भी नहीं मिल रही थी। इतने में मुझे एक ऑटो दिखाई दिया। मैंने पूछा भाई स्टेशन चलोगे, तो बोला सर 150 रुपए। मैंने कहा, यार! इतना पैसा क्यों मांग रहे हो, दिन में तो सिर्फ 70 रुपये में हो जाता है। तो उसने कहा रात का चार्ज है। मैं इतने पैसे नहीं देना चाहता था। इतने में मैंने देखा कि एक और ऑटो आ गया। उस ऑटो से एक लड़की उतरी। पास जाकर देखा तो एक अधेड़ उम्र के मुसलमान बाबा थे। मैंने उनसे पूछा बाबा स्टेशन के कितने पैसे लोगे तो उन्होंने कहा बैठ जाओ। भाई 50 रुपये दे देना। मैं बैठ तो गया पर मन में उनकी बढ़ी दाढ़ी और सर पर टोपी देखकर कुछ पहले से ही सिखाये गए ख्यालों ने घर कर लिया, क्योंकि जब आपके पास कुछ कीमती होता है तो मन में लुटने का ख्याल पहले आता है। बाबा ने ऑटो का गेयर डाल दिया और बढ़ दिए मंज़िल की और। मन में राष्ट्रवादी ख्याल घर कर गए थे। तभी बाबा जी ने मेरे ख्यालों की तंद्रा तोड़ते हुए बातों का सिलसिला शुरू कर दिया। बोले बहुत भीड़ है आज सड़कों पर। मैंने कहा बाबा जी कल रक्षा बंधन है। तो उन्होंने कहा, हाँ भाई, त्यौंहार पर बहनों को भाइयों का इंतज़ार तो रहता ही है। मैंने उत्सुकतावश पूछ लिया, बाबा आप भी..... । इससे पहले की मेरा सवाल अपने मूल रूप में आ पाता। बाबा ने मेरी बात समझते हुए मेरे सवाल का जवाब अपने अंदाज़ में दिया। बोले, बेटा अपने ही भाई का खून पीने वाला कभी भी सच्चा इंसान नहीं हो सकता। गीता और कुरान सब एक जैसा ही सिखाते हैं। कुरान में लिखा है कि अगर मुसलमान नमाज़ पढ़ने जा रहा हो और आपके रास्ते में कोई हिन्दू आ जाये तो उसे तकलीफ देकर रास्ता लेना गुनाह है और उस समय पढ़ी गई नमाज़ कभी भी खुदा के घर में कुबूल नहीं होती। ये कहकर बाबा ने मुझे सब कुछ समझा दिया था। सारे सवाल खत्म हो गए थे। सफर और आत्म मंथन जारी था। मेरे ज़ेहन में वास्तविकता और भ्रम का फर्क साफ़ हो रहा था।

दोस्ती का महत्व

मथत मथत माखन रही, दही मही बिलगाव

रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय

गिरिए परवत शिखर ते, परिये धरनि मंझार

मूरख मित्र न कीजिए, बूडो काली धार

मनुष्य एक समाजिक प्राणी है जिसमें विचारों को व्यक्त करने एवं भावनाओं को महसूस करने की शक्ति होती है। इसी कारण मनुष्य अकेला नहीं रह सकता है। वह एक–दूसरे के प्रति आकर्षित होता है, उसे भावनात्मक रूप से अपना समझता है और बिना किसी रक्त संबंध के अपने दुःख–सुख उससे बांटता है तथा सदैव उसकी मदद करता है। ऐसे संबंधों को दोस्ती कहा जाता है। इसीलिए प्रत्येक वर्ष अगस्त माह के पहले रविवार को फ्रेंडशिप डे मनाया जाता है।

मित्रता क्या होती है, ये तो सब जानते है, लेकिन दुनिया में दोस्ती को एक रिश्ता समझा गया है जो हर उम्र के लोगों के लिए है। यह विभिन्न प्रकार से बनाया जा सकता है। मित्रता के कुछ रूपों का वर्णन निम्नानुसार है:–

बचपन की मित्रता – जब हम छोटे होते हैं, तो हमें खेलने के लिए अपनी उम्र के किसी दोस्त की जरूरत होती है। कॉलोनी में हमें कई तरह के मित्र मिलते हैं, पर उनमें कुछ हमें खास लगते हैं जिनके साथ हमें खेलना, बातें करना अच्छा लगता है और हम उन्हें अपने साथ देखना चाहते हैं। इस उम्र में मनुष्य को खेलना ही सबसे अधिक प्रिय और महत्वपूर्ण लगता है और इनके इस कार्य में जो उनके सबसे अच्छे सहयोगी होते हैं, वे उनके खास मित्र बन जाते हैं।

स्कूल, कॉलेज और ऑफिस की मित्रता – बच्चा बड़ा होता है। यह समय उसके जीवन का सबसे सुंदर समय होता है जिसमें वह जीवन का बेहतरीन समय व्यतीत करता है। दूसरी ओर, यही वह समय भी होता है जब उसे अपना भविष्य बनाना होता है। इस समय दोस्तों का उसकी मानसिकता पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। अच्छी और बुरी संगत उसके जीवन को प्रभावित करती है। स्कूल और कॉलेज के दौर में दोस्ती की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। पढ़ाई के लिए, मनोरंजन के लिए, यहां तक कि मन में उठ रहे विचारों के लिए उसे एक हम उम्र साथी की जरूरत होती है। ऑफिशियल लाइफ में व्यक्ति को मित्रों की बहुत आवश्यकता होती है। व्यस्त शेड्यूल के कारण मनुष्य मानसिक रूप से अत्यधिक थक जाता है। ऐसे में एक सच्चा मित्र ही थकावट से उसे बाहर निकालता है।

रक्त संबंधों में मित्रता – जरूरी नहीं, दोस्ती केवल स्कूल, कॉलेज या गली–मौहल्ले के हमउम्र के लोगों के बीच ही हो। आज के समय में सबसे करीबी दोस्त माता–पिता, दादा–दादी और भाई–बहन ही होते हैं। और ये रिश्ते अपनी उम्र के अनुभव को छोड़ अपने बच्चों के साथ उनके जैसे बन जाते हैं। उन्हें खेल–खेल में सही और गलत का मतलब समझाते हैं, तब ये रिश्ते ही सबसे बेहतर दोस्त कहलाते हैं। आज क्राइम इस क़द्र बढ़ रहा है कि बाहरी दुनिया पर व्यक्ति कम विश्वास कर पाता है। ऐसे में दोस्त शब्द के मायने घर में ही तलाशने पड़ते हैं। रक्त संबंध से बनी मित्रता के रिश्ते आज सबसे ज्यादा कारगर सिद्ध होते हैं।

जानवरों और पशु–पक्षियों से मित्रता – यह ज़रूरी नहीं कि मनुष्य केवल मनुष्य से ही मित्रता करे। कई लोगों को पालतू जानवरों से बहुत अधिक प्रेम होता है। वे अपने दिल की बहुत सी बातें पालतू जानवरों से करते हैं। उनसे बातें कर, वे अपने मन का बोझ हल्का महसूस करते हैं।

इस प्रकार ये थे मित्रता अथवा दोस्ती के विभिन्न रूप, जो आमतौर पर हमारे सामने आते हैं और जो हमें इस सामाजिक जीवन का हिस्सा बनाते हैं।

मित्रता का महत्व – मित्रता का महत्व बहुत बड़ा है। जब भी व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के साथ स्वयं को परिपूर्ण समझे, उसकी तकलीफों को अपना समझे, अपने दुःख–दर्द बता सके, भले ही दोनों में न रक्त संबंध हो, न जातीय संबंध हो और न ही इंसानी, सजीवता का संबंध, लेकिन फिर भी वह भावनात्मक दृष्टि से उससे जुड़ा हुआ हो, यही मित्रता का अर्थ है। जैसे एक लेखक को अपनी कलम और डायरी से वैसा ही लगाव होता है जैसे किसी मित्र से। बचपन में छोटे बच्चों को अपने खिलौनो से बहुत लगाव होता है। वे उनसे मानो ऐसे बातें करते हैं, लड़ते हैं, जैसे किसी मित्र से कर रहे हों। एक और बात है। कुछ लोग ईश्वर से भी मित्रता कर लेते हैं। उससे अपने दिल की आपबीती कहकर अपना दिल हलका कर लेते हैं। ईश्वर में आस्था और उनके प्रति संपूर्ण समर्पण ही वास्तव में ईश्वर से सच्ची मित्रता है।

इन सभी बातों का अर्थ यही है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो अकेला नहीं रह सकता है। उसे अपने दिल की बात कहने के लिए किसी न किसी साथी की जरूरत होती है, फिर चाहे वह मुनष्य अथवा जानवर और कोई निर्जीव वस्तु या ईश्वर जैसी कोई अद्भुत शक्ति ही क्यों न हो।

वर्तमान एवं ऐतिहासिक मित्रता में अंतर – आज के कलयुगी समय में मित्रता की परिभाषा बहुत भिन्न है। पहले दोस्ती, मरते दम तक निभाई जाती थी। आज दोस्ती एक–दो महीने तक या एक नौकरी से दूसरी नौकरी तक ही रहती है। दोस्ती में विश्वासघात तो मानो इस कलयुग में आम बात है। दूसरी ओर, यदि हम इतिहास के पन्नों को पलटकर देखें तो यह मित्रता के उदाहरणों से भरा हुआ है। पहले मनुश्य मित्रता को सर्वोपरि रखता था, इसलिए उस समय धोखाधड़ी जैसे अपराध नहीं होते थे। दोस्ती के कई उदाहरण तो पौराणिक काल में भी मिलते हैं जैसे कृष्ण और सुदामा की दोस्ती, राम और सुग्रीव की मित्रता, पृथ्वीराज चौहान और चंद्रबरदाई की मित्रता, महाराणा प्रताप और उनके घोड़े चेतक की मित्रता। ये सभी ऐसे प्रमाण हैं जो आज हमें मित्रता का सही महत्व का अर्थ सिखाते हैं।

उपसंहार – इन सभी बातों से यही समझ आता है कि मनुष्य किसी भी दौर में चला जाए, उसे मित्र की जरूरत हमेशा रहेगी। सामाजिक प्राणी के तौर पर यह मित्र शब्द के बिना अधूरा है। कहते हैं न सुख बांटने से बढ़ता है और दुःख बांटने से कम होता है। इस पंक्ति को चरितार्थ करने के लिए हमें एक मित्र की हमेशा जरूरत होती है। मित्रता एक अनमोल बंधन है जिसका जीवन में होना हमारी जरूरत भी है। अतः हमेशा स्वयं को दोस्ती के किसी न किसी बंधन में अवश्य बंधना चाहिए। यही सामाजिक जीवन का सत्य है।

– दीपिका जाले, प्रशिक्षु

हिंदी के प्रचार-प्रसार में सिनेमा का महत्व

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतीय संविधान में 14 भाषाओं को स्वीकृति प्रदान की गई थी। तब से लेकर आज तक भारत सरकार हिंदी सिनेमा में हिंदी के साथ–साथ क्षेत्रीय भाषाओं पर फिल्म बनाने के लिए सुख–सुविधा प्रदान कर भाषा को प्रोत्साहित कर रही है, क्योंकि प्रत्येक कला विधा की अपनी एक भाषा होती है। जिस प्रकार चित्र की भाषा रंग और रेखाएँ और नृत्य की भाषा पदचाप और मुद्राएँ हैं। उसी प्रकार सिनेमा की भी अपनी एक भाषा है, जिसके माध्यम से यह समाज के लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। प्रारंभिक दौर से लेकर आज तक इसके विकास में हिंदी भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। सिनेमा में शुरू से अंत तक एक कहानी को प्रस्तुत किया जाता है। यह कहानी पात्रों के संवादों द्वारा व्यक्त की जाती है और इन संवादों को ही फिल्म की भाषा कहा जाता है। इन्हीं संवादों की भाषा के माध्यम से भारत की गौरवशाली परंम्पराएँ उसका स्वर्णिम इतिहास और भारतीय संस्कृति को विश्व के कोने–कोने में हिंदी के माध्यम से प्रचार–प्रसार में हिंदी सिनेमा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सिनेमा एक ऐसा माध्यम है जो हमारे समक्ष कई संस्कृतियों और कलाओं को प्रस्तुत करता है। इसमें आरंभिक दौर से लेकर अब तक कई परिवर्तन हुए है। जिससे समय के साथ–साथ हिंदी सिनेमा की तस्वीर भी बदलती रही है।

बॉलीवुड ने हिन्दी के सरल और व्यावहारिक स्वरूप को देश के कोन–कोने तक पहुंचाने का कार्य बडी सुगमता से किया। हिन्दी भाषा में क्षेत्रीय भाषाओं के समावेश ने हिन्दी को न केवल लोगों के दिलों तक पहुंचाया बल्कि आम लोगों ने स्वतः ही बोली में भी भाषा को आत्मसात किया, भले ही इसका माध्यम प्रसिद्ध गाने अथवा संवाद हों। 1934 में जब हिन्दी फिल्मों का सफर शुरू हुआ तो हिन्दी भाषा अपने असली रूप में थी, पर आज पान सिंह तोमर, उड़ता पंजाब, तनु वेड्स मनु, जैसी फिल्मों ने हिन्दी सिनेमा में भाषा के ट्रेंड को बदला और फिल्मों में हिन्दी के साथ–साथ क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाने लगा। हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्य को चाहे वह उपन्यास हों या कहानियां, समय–समय पर फिल्मकारों ने उसे जन–मानस तक पहुंचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शुरुआत में फिल्में अधिकतर देवी–देवताओं अथवा पौराणिक गाथाओं पर आधारित थी जिनमें ज्यादातर हिंदी का प्रयोग किया जाता था। इसके बाद ऐतिहासिक काल में विदेशी आक्रांताओं के आगमन से मुग़ल शासकों की प्रधानता के कारण उर्दू का प्रयोग किया जाने लगा। दूसरी ओर ग्रामीण पृष्ठभूमि की फिल्मों में हिंदी के साथ–साथ स्थानीय भाषाओं जैसे भोजपरुी आदि का प्रयोग किया गया है। बॉलीवुड और हिंदी एक दूसरे के पर्याय है। बॉलीवुड ने हिंदी को कभी विषय वस्तु के रूप में चुना तो कभी भाषिक माध्यम के रूप में अपनाया। जब बॉलीवुड की बात होती है तो हमारे मन में एक ऐसी तस्वीर उभरती है जिसने सभी भाषा के क्षेत्रों व सीमाओं को तोड़ते हुए हिंदी को जन सुलभ और लोकप्रिय भाषा के पद पर आरूढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारतीय सिनेमा जगत की पहली सवाक फिल्म 'आलमआरा' की भाषा हिंदी ही थी। सिनेमा की एक भाषा वह भी है जिसे निर्देशक कैमरा, लाइटिंग, नृत्य, हाव–भाव तथा ध्वनि और संगीत से अभिव्यक्त करता है। सिनेमा की भाषा में संवाद और गायन का विशेष महत्व है। हिंदी फिल्मों पर भोजपुरी का इतना अधिक प्रभाव है कि हिंदी की अधिकांश मसाला फिल्मों में भोजपुरी गीत, संवाद अथवा पात्र रखना आम बात हो गई है। 70 से 80 के दशक में बनी आधुनिक फिल्मों ने हिंदी भाषा के महत्व और समाज में आज भी उसके महत्वपूर्ण स्थान की विषय वस्तु को लेकर हिंदी के प्रचार प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फिल्म 'किसी से न कहना' के एक प्रसंग में जब उत्पल दत्त भाषा और हिन्दी की भारतीय परिवेश में उसकी महत्ता को बताते हुये कहते हैं – चीन, जापान रूस जर्मनी जैसे देशों नें भाषा के बल पर तरक्की की है, मगर हमारे देश में तरक्की का अर्थ है सिर्फ अच्छी अंग्रेजी भाषा जानना। इस संवाद का भाषा के महत्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है और सटीक संदेश देता है जो किसी लेख के माध्यम से शायद इतना संभव न हो।

पहले कुछ लोग ऐसा समझते हैं कि हिंदी रोजगार–सृजक भाषा नही है। हिन्दी लेखन से जुडे लोग या तो रोजीरोटी के लिये कोई अन्य कार्य करते थे या फिर जीविका के लिये संघर्ष में उनका जीवन व्यतीत हो जाता था। पिछले लगभग दो दशकों ने इस भ्रम को कुछ हद तक दूर करने में सरकार के साथ–साथ फिल्मों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज चाहे वह हिन्दी फिल्मों के लेखक हों, गीतकार हों, कहानीकार हों, वे न केवल अच्छा धन अर्जन कर रहे हैं, बल्कि कई नये अवसर भी पैदा हो रहे हैं जैसे विभिन्न विदेशी भाषाओं की फिल्मों का हिन्दी में अनुवाद हो रहा है। अवतार, हैरी पॉटर और स्पाइडर मैन जैसी फिल्मों को भी अपने बाजार को विस्तृत करने के लिये भारत में हिन्दी में अनुवाद करके प्रसारित करना लाभप्रद व्यापार सिद्ध हुआ है। आज कई बडी कंपनियां व्यापार बढ़ाने के लिये अमेजन एलेक्सा बॉलीवुड के सितारे अमिताभ बच्चन के साथ उनकी आवाज को हिन्दी भाषा में उपयोग करने के लिये हिन्दी और बॉलीवुड दोनो का सहारा ले रहीं हैं।

हिन्दी वैश्वीकरण में सिनेमा की भूमिका

हिन्दी फिल्मों के माध्यम से देश ही नही अपितु विदेशों में भी हिन्दी को प्रोत्साहित किया गया। इस क्रम में राजकपूर की 'आवारा' और 'श्री 420', को बहुत अधिक श्रेय जाता है। उस समय रूस जैसे देश में इन फिल्मों की तूती बोलती थी। अमिताभ बच्चन, माधुरी दीक्षित, लता मंगेशकर और हिन्दी फिल्मों के अन्य कई कलाकार देश–विदेश के बड़े–बड़े शहरों में अपना रंगमंचीय प्रदर्शन सफलतापूर्वक कर चुके हैं। भारतीय फिल्में और गीत कई देशों में लोकप्रिय हैं। मेहँदी हसन व गुलाम अली पाकिस्तानी गजल गायकों के हिन्दी गीत आज भारत में लोकप्रिय हैं। पौराणिक गाथाओं पर आधारित सीरियल भी हिंदी के प्रसार में किसी से कम नहीं हैं। रामायण, महाभारत, चाणक्य जैसे सीरियलों में कलाकारों के सशक्त अभिनय और संवादों ने देश–विदेश में हिंदी भाषा की गरिमामयी शब्दावली की छाप छोड़ी है। फिल्म और साहित्य समाज का दर्पण माने जाते हैं। ऐसे में जब फिल्मकार फौजी से बागी बने पान सिंह तोमर पर फिल्म बनाते हैं, तो इस बात का विशेष ध्यान रखते हैं कि पान सिंह तोमर जिस पृष्ठभूमि से आते हैं, तो उसकी संवादी भाषा में उसे अपनी पृष्ठभूमि की अनूभूति हो। आज कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से अरुणाचल तक हिंदी बोलने वाले मिल जाएंगे। दक्षिण में भी हिंदी की फिल्में लोकप्रिय हैं। लगान और गदर जैसी कितनी ऐसी फिल्में हैं जिन्होंने अभूतपूर्व सफलता हासिलकर हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में योगदान दिया है।

अगर आप किसी से ऐसी भाषा में बात करते हैं, जिसे वह समझता है, तो वह उसके दिमाग तक जाती है। यदि आप उससे उनकी ही भाषा में बात करते हैं तो वह उसके ह्रदय तक जाती है। सिनेमा भाषा के प्रचार–प्रसार का बेहतरीन माध्यम है। सिनेमा में हर तरह की हिंदी के लिए स्थान है।

70 के दशक में अगर देखा जाये तो हिंदी सिनेमा में सशक्त और समानांतर सिनेमा का आरम्भ हुआ। जिसमें श्याम बेनेगल और गोविन्द निहलानी जैसे फ़िल्मकारों ने सिनेमा की भाषा और हिंदी के साथ–साथ उच्चारण की स्पष्टता पर भी ध्यान दिया। ऋषिकेश मुखर्जी ने भी सत्यकाम, अनाड़ी, अनुपमा चुपके–चुपके, खट्टा–मिट्ठा, गोलमाल जैसी उत्कृष्ट फ़िल्में बनायीं। इस दौर में मुस्लिम साहित्य से जुड़े गीतकार साहिर लुधियानवी, शकील बदांयूनी, कैफ़ी आज़मी, सुनील दत्त, राजेन्द्र कुमार आदि भी अपना आधिपत्य जमा चुके थे। ये सभी उर्दू के अच्छे जानकर थे। जिसके कारण उर्दू गीत, गजल, कव्वालियों का हिंदी सिनेमा में प्रमुख स्थान रहा। 80 के दशक में हिंदी सिनेमा की भाषा में बम्बईया पुट आने लगा। हिंदी सिनेमा ने अपने कथानक, संवादों, पात्रों और भाषा की अभिव्यक्ति के आधार पर इन मुद्दों की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित किया है। हिंदी फिल्मों के विस्तार का प्रभाव क्षेत्रीय भाषाओं पर भी पड़ा है और इसी प्रभाव के कारण हरियाणवी, पंजाबी, राजस्थानी, बुन्देली, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी आदि क्षेत्रीय भाषाओं में फ़िल्में बननी शुरू हुई। हिंदी की सहायक भाषाएँ होने के कारण अपने क्षेत्रों के अतिरिक्त अन्य हिंदी भाषी क्षेत्रों में भी ये चर्चित

हुई। हिंदी फिल्मों पर भोजपुरी का इतना जबरदस्त प्रभाव है कि हिंदी की अधिकांश मसाला फ़िल्मों में भोजपुरी गीत, संवाद या पात्र रखना आम बात हो गई है। आज हिंदी सिनेमा को जरूरत है कि क्षेत्रीय भाषाओं में फ़िल्में अधिक से अधिक बने जिससे कि हिंदी भाषा का वटवृक्ष और भी ऊर्जास्रोत विकसित कर सके क्योंकि इन विभिन्न प्रकार की बोलियों को बोलने वाला सिनेमा भी अंततः हिंदी भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है। दुनिया की कोई भी भाषा अपने नए माहौल से अनुकूलन किये बिना अपना अस्तित्व स्थापित नहीं कर सकती। यही कारण है कि हिंदी भाषा में सिनेमा निर्माण के साथ–साथ उर्दू को प्रमुख सहायिका भाषा के रूप में प्रयोग कर गीतों और संवादों के लिए दृश्यता का समावेश किया गया।

इन सब तथ्यों से हम कह सकते हैं कि हिन्दी फिल्मों ने हिन्दी को शत–प्रतिशत बढ़ावा दिया है। भाषा ने समाज और संस्कृति की अवरिल धारा प्रवाहित की है और हिंदी सिनेमा ने अपने कथानक, संवाद, पात्र तथा भाषा की अभिव्यक्ति के आधार पर राष्ट्रीयता, सामाजिक संरचना, रिश्तेदारी, आतंकवाद, कृषि, किसान, प्रवास आदि विषयों पर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। आज भी अफगानिस्तान और खाड़ी देशों में मनोरंजन के महत्वपूर्ण साधन हिंदी फिल्में ही हैं। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भाषा ही सिनेमा की शक्ति है जिसके कारण आज हिंदी सिनेमा अपनी उत्कृष्टता की चरम सीमा तक पहुँचा है। अपने प्रारंभिक दौर से लेकर आज तक उसके अनेक प्रतिमान बदले है जिससे कभी स्थानीय भाषाओं का व कभी उर्दू मिश्रित शब्दावली का प्रयोग समय और समाज की माँग के अनुसार किया गया है। आलमआरा से लेकर पद्मावत और मुक्केबाज तक भाषा के अनेक रूप देखे जा सकते हैं। सिनेमा के लिए भाषा का बहुत महत्त्व है। भाषा पर ही फिल्म की सफलता निर्भर करती है। जिस फिल्म में भाषा की शक्ति जितनी अधिक होती है, वह फिल्म उतनी ही सार्वभौमिक और सर्वकालिक बन जाती है। इसी भाषा की सक्षमता के दम पर आज हिंदी सिनेमा अपना परचम लहरा रहा है।

–डॉ. निधि शर्मा, कार्मिक अधिकारी

स्रोत–https://www.worldwidejournals.com/indian-journal-of-applied-research-(IJAR)/recent_issues_pdf/2014/November/November_2014_1492778824__152.pdf

## स्वाभिमान	## कुदरत
निस्तेज शरीर पड़ा धरा पर जैसे उठ खड़ा नहीं होता वैसे ही अपने अहम को लेकर कोई बड़ा नहीं होता। होता होगा नाम जगत में अहम पे पलने वालों का मगर जगत में कोई हीरा ताम्र जड़ित नहीं होता। निस्तेज शरीर पड़ा धरा पर .... ऊँचा शिखर मंज़िल है अपनी कैसी भी फिर चढ़ाई हो पर्वत हो कोई भी उसकी कैसी भी ऊंचाई हो। हिम्मत के आगे कैसा भी हो शिखर अड़ा नहीं होता सच्चा हो पौरुष तो कोई काज बड़ा नहीं होता। निस्तेज शरीर पड़ा धरा पर .... मंज़िल पर हो अगर निगाहें रास्ता चाहे कैसा हो निशाने पर हो अगर आँख तो धनुर्धर अर्जुन जैसा हो। मन में हो सच्चाई वीर के मस्तक हो स्वाभिमान जड़ा उस युद्ध मे कोई दुर्योधन टिक कर खड़ा नहीं होता। निस्तेज शरीर पड़ा धरा पर .... गर भाग्य मे रण हो तेरे बन योद्धा अपने कदम बढ़ा मार्ग हो दुर्गम कितना भी मुश्किलों से हो पटा पड़ा। न डर न सिंहर बस शस्त्र उठा शत्रु है सीना तान खड़ा कर दे साबित कुछ भी तो स्वाभिमान से बड़ा नहीं होता। निस्तेज शरीर पड़ा धरा पर .... –सुधीर कुमार, अनुभाग अधिकारी	मिट्टी में उर्वक न होती, तो बागों में फूल न होता। फूलों में रस न होता, तो मधुमक्खी में जान न होती। वेदना मधुमक्खी में न होती, तो शहद का वरदान न होता। शहद में शक्ति न होती, तो जीव पाषाण बन गया होता। प्रकृति में जीव न होते, तो प्रकृति में चमक न होती। प्रकृति से प्रेम न होता, तो प्रेम विषपान बन गया होता। विष को भोले ने ग्रहण न किया होता, तो इंसान भगवान बन गया होता। – धर्मेन्दर गुप्ता, तकनीकी सहायक

पिता का प्यार

एक पिता का प्यार अक्सर, शब्दों से परे होता है,
लहजे में होती है सख्ती, पर दिल हमेशा नरम होता है।

उनकी डांट में भी अक्सर, जिंदगी का सार छुपा होता है,
हो उनका हाथ सर पर, तो हर ग़म मीलों दूर होता है।

इसलिए कहते है कि....
अरे रोटी बापू कपड़ा बापू – है मजबूत मकान पिता,
दुख सह कर सुख देने वाला, है सच्चा इंसान पिता।

अरे घर का रक्षक संभल शक्ति, धर्म कर्म ईमान पिता,
बच्चे कितनी पदवी पा जा, उनकी है पहचान पिता।
भई ज्ञान सिखाता संस्कार, और पूरा रखता घ्यान पिता,
ऊंच नीच का भेद बताके, मेटे हैं अज्ञान पिता।

खुद जल के घर रोशन करता, होता दीप समान पिता,
जब तक सर पे छत्रछाया, बच्चों का है अभिमान पिता।
करता है कल्याण सदा रे, जीवन कश्ती पतवार पिता।

अरे माँ की बिंदी चूड़ी है, और सिंदूर सुहाग पिता,
बच्चों की खुशहाली खातर, पल–पल करता त्याग पिता।
घर के ताने बाने बुनता, एक मधुर अनुराग पिता,
खुद कठिनाई सहकर लिखता, बच्चों का सौभाग्य पिता।

अरे मत भूलों एहसान पिता का, घर की नींव जमावे सै,
अपने सारे शौक छोड़ के, दिन और रात कमावे सै।
अरे एकला पिता ही, सारे घर का बोझ उठावे सै,
बापू ही बच्चों की खातर, दुनिया में धक्के खावे सै।

–शालू नैन, वरिष्ठ सहायक

उलझे-उलझे पल

कुछ पल चलो इनको सुलझा लो,
फिर जीवन सिद्ध सरल हो जाएगा,
पूर्णफलित या समाकलित या फिर अवकल हो जाएगा।
सिर्फ निरंतरता रखना तुम और जरा सा संयम भी,
अंक गणित या जीवन विज्ञान के प्रश्नों
जैसे हम हल हो जाएंगे, ऐसे ही मेरी जिंदगी के
कुछ पल यूं ही बीत जाएंगे,

क्या सीखा मैंने जिंदगी से,
जिंदगी जीने का सलीका सीखते–सीखते।
तू ही बता क्या तेरे भी कुछ पल,
मेरी तरह यूं ही बीत जाएंगे,
लोगों के कहे रास्ते पर चलते–चलते,
मेरे कुछ पल यूं ही बीत जाएंगे।
लोगों का चेहरा बेनक़ाब करते–करते,
बचे हुए पल भी मेरे खुशी से बीत जाएंगे,
जिंदगी में कुछ सीखते–सीखते मेरी जिंदगी के
अनमोल पल यूं ही बीत जाएंगे।

क्या सिर्फ जीवन विज्ञान के प्रश्नों का,
हल निकालना ही मेरा जीवन था?
कुछ अनमोल पल मेरे जीवन के मुझे यही सिखा रहे हैं कि,
तू चिंता मत कर, मैं तुझे विश्वास दिलाता हूं,
तेरे जीवन के कुछ प्रकाशित पल,
खुशी–खुशी यूं ही बीत जाएंगे।

कभी–कभी बुझ जाता है दीपक ज्ञान का,
जब मैं सोचती हूं अपने अनमोल पल की,
जब उठती है लहर मेरे जीवन विज्ञान के प्रश्नों की,
कहां जाना था और कहां जा रही हूं मैं,
उलझनें क्यूं इतना बढ़ रही हैं, क्या चाहिए, क्यूं चाहिए,
खुश हूं मैं, यह दिखावा ही चाहिए।

काफी हुआ रोना–धोना, अब बस सुकून चाहिए,
छोड़ो ये नकल, इनकी और उनकी करना,
अब तो सिर्फ अपने अंदर का तू चाहिए।
अब लगता है सबसे बड़ी चुनौती मेरे ख्यालों की,
जो सरल नहीं इन अहसासों को भूल जाने की।

एक कसक सी उठती है, उलझे–उलझे पलों को सुलझाने की,
फिर जाने क्या सोच कर थम जाती है,
यही जीवन है और जिदंगी जीने का सलीका भी।
चलो आओ, सुलझा लें जिदंगी जीने का सलीका,
ऐसे ही मेरी जिंदगी के कुछ पल यूं ही बीत जाएंगे।

–डॉ. खुशबू चौधरी

पर्यावरण

मैं पेड़ हूं, मैं हूं हवा, मैं सृष्टि का उपहार हूं,
मैं स्वच्छ निर्मल नीर हूं, मैं ही जगत आधार हूं।
मुझमें बसा हर नाद है, मैं सृजन हूं, संगीत हूं,
मैं हूं अचेतन चेतना, मैं ही धरा का मीत हूं।
सुन ले समझ ले तू मनुज, मेरा परम है आवरण,
मैं हूं प्रबल निरपेक्षता, कहते मुझे पर्यावरण।

डूबने लगी हैं, कश्तियाँ किनारों पर ठहर जाओ,
बहुत धूल हैं, इस शहर में जरा ठहर जाओ।
कहाँ हैं वो परिंदे जो चहकते थे डालियों पर,
मरने लगे हैं फड़फड़ा कर जरा ठहर जाओ।
है स्वर्ग से सुन्दर धरा, अन्तर्निहित अनुपात में,
रखना जरूरी संतुलन,बस ध्यान रख इस बात में।
वसुधैव सारा तंत्र है, कल्याण मेरा मंत्र है,
लौकिक चराचर युक्ति है, अद्भुत अलौकिक यंत्र है।
संयम सहित उपयोग का, जब तक करोगे आचरण,
होता रहेगा तब तलक, हर आपदा का परिहरण।

मलय सुगन्धित हवा नहीं है, दम घुट–घुट है जाता ।
धुँआ धूल भरी सांसो से, जीवन घटता जाता ।
हवा प्रदूषित, नीर प्रदूषित, दूषित सब संसार ।
कैसे जीएं, जीने का है कोई नहीं आधार ।।
पेड़ नहीं है, फल–फूल नहीं, कटते जाते जंगल ।
मेघ न बरसे फुरसत में, कैसे हो फिर मंगल ।।

सागर विषैला कहां था, हमने जहर से भर दिया।
मतिअंधता की होड़ ने, हर काम उल्टा कर दिया।
संकट खड़ा अस्तित्व पर, दूषित हुई हर चीज है।
दूषित कलेवर में छिपा, आपदा का बीज है।
अब भी समय शेष है, कर सोच का कायांतरण।
पुरुषार्थ ही प्रारब्ध है, करना है केवल जागरण।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग भवेत।।

– महाराम तंवर, सलाहकार (राजभाषा)

संस्थागत गतिविधियां

संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए निम्नलिखित विषयों पर व्यापक जानकारी प्रदान करने हेतु कार्यशालाओं के साथ–साथ अन्य सांस्कृतिक गतिविधियां भी आयोजित की गईं:–

दिनांक	विषय
18 सितंबर, 2024	कवि सम्मेलन का आयोजन
26 सितंबर, 2024	योग एवं स्वास्थ्य शिविर का आयोजन
31 अक्टूबर, 2024	राष्ट्रीय सतर्कता एवं एकता दिवस का आयोजन
16 दिसंबर, 2024	तृतीय दीक्षांत समारोह
31 दिसंबर 2024	हिंदी कार्यशाला का आयोजन
25 जनवरी 2025	पोंगल उत्सव का आयोजन
02 फरवरी, 2025	वसंत पंचमी के अवसर पर सरस्वती पूजन
06–28 फरवरी, 2025	खेल सप्ताह का आयोजन
28 फरवरी, 2025	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन
01 मार्च, 2025	आरसीबी स्थापना दिवस का आयोजन
08 मार्च, 2025	सांइंटिफिक रिट्रीट के दौरान अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन
27 मार्च, 2025	'राजभाषा नीति और दैनिक कार्यों में आईटी टूल्स का प्रयोग' विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन

कवि सम्मेलन

केंद्र सरकार के कार्यालयों में सितंबर के महीने में हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है जिसमें सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित कार्यशालाएं, प्रतियोगिताएं और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित की जाती हैं। इसी क्रम में संस्थान में भी हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस बार दिनांक 18 सितंबर, 2024 को आयोजित कवि सम्मेलन हिंदी पखवाड़े का मुख्य आकर्षण था जिसमें भोजपुरी भाषा के वक्ता, मंच संचालक तथा हास्य कवि श्री विनय कुमार विनम्र के अतिरिक्त श्री दीपक कुमार और कवियत्री सुश्री खुशबू शर्मा को आमंत्रित किया गया जिन्होंने अपने हास्य और कविताओं से सभी का मन मोह लिया।

कार्यपालक निदेशक के साथ गणमान्य कवि एवं अन्य अधिकारीगण

कवि सम्मेलन के अवसर पर कार्यपालक निदेशक एवं अधिष्ठाता महोदय के संबोधन

आरसीबी में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता पर कार्यशाला

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की झलक

आरसीबी स्थापना दिवस के अवसर पर कार्यपालक निदेशक का संबोधन

स्थापना दिवस के अवसर पर संस्थान की नई वेबसाइट का उद्घाटन

दीक्षांत समारोह के अवसर पर सचिव, जैवप्रौद्योगिकी विभाग, मुख्य अतिथि प्रो. अजय सूद और कार्यपालक निदेशक, आरसीबी

नराकास ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में श्री महराम तवंर सलाहकार (राभाषा) को प्रथम पुरस्कार

खेल सप्ताह के विजेताओं को ट्रॉफी

वसंत पंचमी के अवसर पर छात्रों द्वारा सरस्वती पूजन

नराकास, फरीदाबाद (का.) द्वारा आयोजित कविता प्रतियोगिता में श्री सुधीर कुमार, अनुभाग अधिकारी को द्वितीय पुरस्कार

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस – 2025 के अवसर पर पत्रिका का अवलोकन करते संस्थान के अधिष्ठाता डॉ. आर.पी. रॉय एवं वैज्ञानिकगण

सलाहकार (राजभाषा) द्वारा हिंदी कार्यशाला की अतिथि वक्ता
श्रीमती मीनाक्षी गुलिया को पुस्तक सम्मान

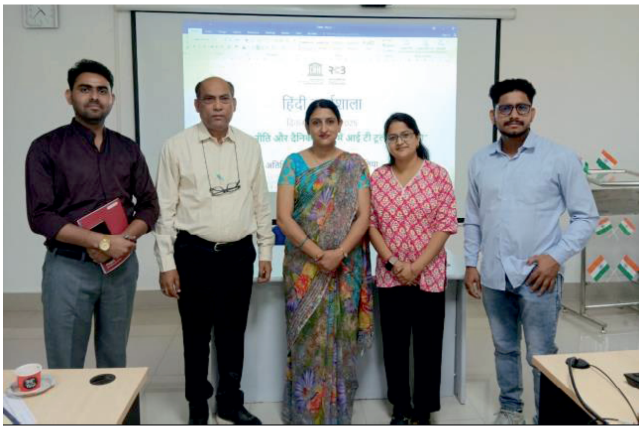

हिंदी कार्यशाला में अतिथि वक्ता के साथ अन्य कार्मिक

महत्वपूर्ण प्रशासनिक शब्द, अर्थ और वाक्य प्रयोग

क्रम सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी शब्द	अंग्रेजी वाक्य	हिंदी वाक्य
1.	**Circulation**	परिचालन	Booklets are published for **circulation**	पुस्तकें परिचालन हेतु प्रकाशित की जाती हैं।
2.	**Delegates**	प्रतिनिधि	Large number of **delegates** were attended during the Conference	सम्मेलन में बड़ी संख्या में प्रतिनिधियों ने सहभागिता की।
3.	**Evaluation**	मूल्यांकन	**Evaluation** of e-Governance initiatives is done by the Committees.	सरकार की ई–गवर्नेन्स पहल का मूल्यांकन समितियों द्वारा किया जाता है।
4.	**Assistance**	सहायता	Third party **assistance** is provided.	तृतीय पक्ष की सहायता प्रदान की जाती है।
5.	**Recommended**	संस्तुत	The Screening Committee **recommended** the projects.	छानबीन समिति ने परियोजनाओं की संस्तुति की है।
6.	**Sanction Order**	संस्वीकृति आदेश	Fair **sanction order** is placed below for signature please.	संशोधित संस्वीकृति आदेश हस्ताक्षर हेतु प्रस्तुत है।
7.	**Letter of Authority**	प्राधिकार पत्र	**Letter of Authority** may kindly be issued	प्राधिकार पत्र जारी किया जा सकता है।
8.	**Spot study**	स्थल अध्ययन	**Spot study** will be conducted for selected projects	चयनित परियोजनाओं के लिए स्थल अध्ययन किया जाएगा।
9.	**Proceedings**	कार्यवाही	**Proceedings** of the Conference is finalized.	सम्मेलन की कार्यवाही को अंतिम रूप दिया गया है।
10.	**Financial Assistance**	वित्तीय सहायता	**Financial Assistance** will be provided to host State.	मेजबान राज्य को वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।
11.	**Knowledge partner**	नॉलेज पार्टनर	NASSCOM is the **Knowledge Partner** for the Conference.	नेस्कॉम सम्मेलन का नॉलेज पार्टनर है।
12.	**Criteria**	मापदंड	The evaluation **criteria** have been prepared	मूल्यांकन मापदंड तैयार कर लिए गए हैं।
13.	**Background Notes**	पृष्ठभूमि नोट्स	**Background Notes** are prepared by the Consultants	परामर्शदाताओं के लिए पृष्ठभूमि नोट्स तैयार किए जाते हैं।
14.	**Write-up**	आलेख	A **write-up** is to be obtained from the previous awardees	पूर्व पुरस्कार विजेताओं से आलेख प्राप्त किया जाना है।
15.	**Concept Note**	संकल्पना नोट	A **Concept Note** is to be prepared for the meeting	बैठक के लिए संकल्पना नोट तैयार किया जाना है।

क्रम सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी शब्द	अंग्रेजी वाक्य	हिंदी वाक्य
16.	**Declaration**	घोषणा	Shillong **Declaration** has been adopted.	शिलांग घोषणा पत्र को अपना लिया गया है।
17.	**Mechanisms**	तंत्र	The expenditure in respect of the establishment of joint projects and other joint **mechanisms** shall be agreed upon by parties	पक्षकारों द्वारा संयुक्त परियोजनाओं तथा अन्य संयुक्त तंत्रों की स्थापना से संबंधित व्यय पर सहमति व्यक्त की गई है।
18.	**Comparative**	तुलनात्मक	Exchange of information and experts in the field of public administration and undertake joint **comparative** research of common interest.	लोक प्रशासन के क्षेत्र में सूचना तथा विशेषज्ञों के आदान–प्रदान एवं सामान्य अभिरुचि के संयुक्त तुलनात्मक अनुसंधान संचालन।
19.	**Categories**	श्रेणियां	There are six **categories** of Awards	पुरस्कार की छह श्रेणियां हैं।
20.	**Finalization**	अंतिम	**Finalization** of Themes in connection with National Conference on e-Governance	ई–गवर्नेन्स पर राष्ट्रीय सम्मेलन हेतु विषयों को अंतिम रुप देना।
21.	**Certificate**	प्रमाण पत्र	**Certificate** and cash award will be presented to the awardees	पुरस्कार विजेताओं को प्रमाण पत्र और नकद पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।
22.	**Organizing Committee**	आयोजन समिति	**Organizing Committee** will coordinate with various stakeholders on implementation issues.	आयोजन समिति कार्यान्वयन मुद्दों पर विभिन्न हितधारकों से समन्वयन करेगी।
23.	**Award Scheme**	पुरस्कार योजना	**Award Scheme** will be finalized.	पुरस्कार योजना का अंतिम किया जाएगा।
24.	**Concurrence**	सहमति	The proposal is submitted for the **concurrence** of DPC .	प्रस्ताव डीपीसी की सहमति के लिए प्रस्तुत किया जाता है।
25.	**Consultants**	परामर्शदाता या सलाहकार	**Consultants** are engaged for the Conference	सम्मेलन के लिए सलाहकार रखे गए हैं।
26.	**General Advertisement**	सामान्य विज्ञापन	A **General Advertisement** is published	सामान्य विज्ञापन प्रकाशन किया जाता है।
27.	**Portal**	पोर्टल	There is a **portal** for the assessment	मूल्यांकन के लिए पोर्टल है।

क्रम सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी शब्द	अंग्रेजी वाक्य	हिंदी वाक्य
28.	**Weightages**	भारांक	Evaluation criteria and their **weightages** will be reviewed by the Committee	समिति द्वारा मूल्यांकन मापदंड तथा उनके भारांक की समीक्षा की जाएगी।
29.	**Parameters**	मापदंड	Spot study **parameters** have been prepared	स्थल अध्ययन मापदंड तैयार कर लिए गए हैं।
30.	**Identify**	पहचान	**Identify** the speakers	वक्ताओं की पहचान की जाए।
31.	**Miscellaneous**	विविध	Expenditure for **miscellaneous** activities	विविध गतिविधियों के लिए व्यय।
32.	**Input**	इनपुट	**Input** is to be taken from all concerned	सभी संबंधितों से इनपुट लिया जाना है।
33.	**Framework**	रूपरेखा	A **framework** has been developed by Purchase Division	क्रय प्रभाग द्वारा रुपरेखा तैयार की गई है।
34.	**Sensitive**	संवेदनशील	The report is **sensitive** in nature	रिपोर्ट संवेदनशील प्रकृति की है।
35.	**Roles and responsibilities**	भूमिका और दायित्व	**Roles and responsibilities** for the Conference are to be identified	सम्मेलन के लिए भूमिका और दायित्व निर्धारित किए जाने हैं।
36.	**Plenary Sessions**	पूर्ण सत्र	**Plenary Sessions** were held during the Conference	सम्मेलन के दौरान पूर्ण सत्र आयोजित किए गए।
37	**Dashboard**	डैशबोर्ड	**Dashboard** have been created for all the head of the Ministries/Departments.	मंत्रालय/विभाग प्रमुखों के लिए डैशबोर्ड तैयार कर लिए गए हैं।
38.	**Grievance petitions**	शिकायत याचिकाएं	Expediting **grievance petitions** which are pending for more than two months.	दो माह से अधिक लंबित शिकायत याचिकाओं पर शीघ्र कार्रवाई करना।
39.	**Operational trainings**	प्रचालन प्रशिक्षण	1 operational training on NPS has been conducted.	एनपीएस पर एक प्रचालन प्रशिक्षण आयोजन किया गया है।
40.	**Inter-active sessions**	विचार–विमर्श सत्र	Four **inter-active sessions** through Video Conference were held.	वीडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से चार विचार–विमर्श सत्र आयोजित किए गए।
41.	**Modalities**	कार्यप्रणाली	To understand process, modalities and operation of Citizen Charter process being followed in India.	भारत में अपनाई जा रही नागरिक चार्टर की प्रक्रिया, प्रणाली तथा प्रचालन को समझना।

क्रम सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी शब्द	अंग्रेजी वाक्य	हिंदी वाक्य
42.	**Initiatives**	पहल	Quality Management System (QMS) is one of the citizen centric **initiatives** that were taken by this Department.	गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली (क्यूएमएस) इस विभाग द्वारा संचालित नागरिक केंद्रित पहल है।
43.	**Off-campus**	परिसर के बाहर	**Off-campus** training programmes and workshops have been held.	परिसर के बाहर प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित की गई हैं।
44.	**Utilization certificates**	उपयोगिता प्रमाण पत्र	An amount of Rs.39.00 lakh has been released to two State in 2018, based on their performance and the **utilization certificates** received from them.	प्रदर्शन तथा प्राप्त उपयोगिता प्रमाण पत्र के आधार पर वर्ष 2018 में दो परियोजनाओं के लिए 39 लाख रुपये की राशि जारी की गई है।
45.	**Office procedures**	कार्यालय प्रक्रिया	Formulation and simplification of office procedures.	कार्यालय प्रक्रिया की संरचना और सरलीकरण
46.	**Consultation**	परामर्श	Prepared in **consultation** with the National Archives of India.	भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार के परामर्श से तैयार की गई है।
47.	**Modernization**	आधुनिकीकरण	**Modernization** of Government Offices Scheme.	सरकारी कार्यालयों के आधुनिकीकरण की योजना
48.	**Beneficiary**	लाभार्थी	**Beneficiary** has to chip in with 25% of the cost.	लाभार्थी को लागत का 25% वहन करना होता है।
49.	**Exhibition**	प्रदर्शनी	An **Exhibition** has also been organised to showcase the best practices.	सर्वोत्तम पद्धतियों का प्रदर्शन करने के लिए प्रदर्शनी आयोजित की गई।
50.	**Bilateral**	द्विपक्षीय	IIT, Madras and Delhi University have signed **Bilateral** MOUs in the field of technical education.	आईआईटी मद्रास और दिल्ली विश्वविद्यालय ने तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में द्विपक्षीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।
51.	**Trilateral**	त्रिपक्षीय	**Trilateral** MOUs have been signed.	त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
52.	**Customised**	विशिष्ट रूप से तैयार	Department has organized three **customized** short-term Foreign Training Programmes.	राजभाषा विभाग ने विशिष्ट रुप से तीन अल्पकालिक अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किए हैं।

क्रम सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी शब्द	अंग्रेजी वाक्य	हिंदी वाक्य
53.	**Presentation**	प्रस्तुती	The students of RCB showcased their talent on research programmes being conducted at the institute through a presentation.	आरसीबी के छात्रों ने प्रस्तुती के माध्यम से आरसीबी में संचालित भाोध कार्यक्रमों पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।
54.	**Aspirational**	आकांक्षी	Book On development of Strategies for transforming **Aspirational** Districts.	आकांक्षी जिलों के रुपांतरण हेतु कार्यनीतियां विकसित करने पर पुस्तक।
55.	**Priority programmes**	प्राथमिकता कार्यक्रम	Success stories of identified **priority programmes.**	चिन्हित प्राथमिकता कार्यक्रमों की सफलता की कहानियां।
56.	**Biannually**	द्विवार्षिक	It is published on the website of the Department in e-Book form **biannually.**	इसे ई–बुक के रूप में विभाग की वेबसाइट पर द्विभाशी प्रकाशित किया जाता है।
57.	**Excellence**	उत्कृष्टता	Prime Minister's Awards 2018 for Excellence in Public Administration were given.	लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए प्रधान मंत्री द्वारा वर्ष 2018 के लिए पुरस्कार दिए गए।
58.	**Incumbency Position**	पदस्थापना स्थिति	**Incumbency Position** of Under Secretary and above level Officers.	अवर सचिव तथा इससे ऊपर स्तर के अधिकारियों की पदस्थापना स्थिति।
59.	**Liaison**	संपर्क	**Liaison** with State Governments, professional institutions etc in public management matters.	लोक प्रबंधित मामलों में राज्य सरकारों, व्यावसायिक संस्थान आदि से संपर्क।
60.	**Pilot Project**	प्रायोगिक परियोजना	A **Pilot Project** of Study of Citizens' Charters of two Ministries/ Departments was conducted.	दो मंत्रालयों / विभागों के नागरिक चार्टर अध्ययन की प्रायोगिक परियोजना संचालित की गई थी।
61.	**Diagnostic study**	नैदानिक अध्ययन	The single objective of the Project was to undertake a **diagnostic study** of services.	सेवाओं का नैदानिक अध्ययन करना परियोजना का एकमात्र उद्‌देश्य था।
62.	**Affidavits**	शपथ पत्र	Promotion of Administrative Reforms through simplification of procedure such as abolition of **Affidavits.**	प्रक्रियाओं के सरलीकरण के माध्यम से प्रशासनिक सुधारों को बढ़ावा देना जैसे शपथ पत्रों की समाप्ति।
63.	**Extraordinary**	असाधारण	To recognize and award the **extraordinary** work done by officers.	अधिकारियों द्वारा किए गए असाधारण कार्यों को मान्यता प्रदान करना तथा पुरस्कृत करना।

क्रम सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी शब्द	अंग्रेजी वाक्य	हिंदी वाक्य
64.	**Conferred**	प्रदान	Two Awards were **conferred** under Innovation category.	नवाचार श्रेणी के तहत दो पुरस्कार प्रदान किए गए।
65.	**Coherent Programme**	सुसंगत कार्यक्रम	Develop a **coherent programme** of initiatives.	पहल का सुसंगत कार्यक्रम तैयार करना
66.	**Optimal**	इष्टतम	Build capacity to ensure **optimal** use of systems and resources.	प्रणालियों और संसाधनों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए क्षमता निर्माण।
67.	**Synergy**	तालमेल	To develop **synergy** across various Ministries/ Departments.	विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में तालमेल विकसित करना।
68.	**Capacity Building**	क्षमता निर्माण	**Capacity Building** on Public Policy and Governance at both National and International level.	राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सार्वजनिक नीति तथा शासन पर क्षमता निर्माण
69.	**Coordination**	समन्वयन	Public Grievance Division is responsible for **coordination** of the Citizen's Charters.	लोक शिकायत प्रभाग नागरिक चार्टर के समन्वयन के लिए उत्तरदायी है।
69.	**Decorum**	शिष्टाचार	Maintain decorum in the office.	कार्यालय में शिष्टाचार बनाए रखें।
70.	**Enquiry**	जांच	Enquiry may be completed and submit report.	जांच पूरी कर रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization

क्षेत्रीय जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र
Regional Centre for Biotechnology

क्षेत्रीय जैवप्रौद्योगिकी केन्द्र

शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय महत्ता की संस्था
जैवप्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा यूनेस्को के तत्वावधान में स्थापित
द्वितीय मील पत्थर, फरीदाबाद–गुडगांव एक्सप्रेसवे
फरीदाबाद–121001, हरियाणा, भारत
वबसाईट: http://www.rcb.res.in